Chapter-8

अष्टम अध्याय

=:=:=:=:=:=:

॥अ॥ पुराण से प्रेरित कृति

शक्ति- कथावस्तु, वस्तुगत आधार,
मौलिकता और आधुनिकता
अभिव्यक्ति पक्ष - भाषा ॥मुहावरें,
लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ॥,
संवाद योजना,
रस योजना,
बिम्ब विधान,
अलंकार विधान,
छन्द विधान.

॥ब॥ निजी एवं पारिवारिक प्रेरणा स्त्रोत से प्रेरित कृतियाँ

झंकार-
अंजलि और अर्घ्य
उच्छ्वास

-- विवेचन एवं विश्लेषण --

अभिव्यक्ति पक्ष =- भाषा॥ मुहावरें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ॥,
रस योजना, बिम्ब विधान,
अलंकार विधान, छन्द विधान

इस अध्याय को हमने दो भागों में विभाजित कर दिया है. (अ) भाग में पुराण प्रेरित एक मात्र रचना " शक्ति " की विवेचना की गई है. तथा (ब) भाग में निजी एवं पारिवारिक प्रेरणा स्त्रोत से प्रेरित कृतियाँ- " झंकार ", " अंजलि और अर्घ्य ", " उच्छवास " का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है.

(अ)

शक्ति

इस खण्डकाव्य का प्रणयन पौराणिक देव-दानव संग्राम को लेकर हुआ है. दैत्यों के अत्याचारों से देव-लोग चिंतित हो गए थे. उनकी पराजय होती रहती थी. तब देवताओं ने विष्णु से सहायता के लिए प्रार्थना की. किंतु वे भी असमर्थ सिद्ध हुए. तब सभी देवों ने अपने तेज से एक मातृ- मूर्ति का निर्माण किया. उस मातृ-मूर्ति ने महिषासुर, शुंभ- निशुंभ आदि असुरों का वध किया. इस प्रकार देव समाज को दानवों के अत्याचारों से मुक्ति मिली. और वे शांति से रहने लगे. इसप्रकार इस काव्य में देव-दानव के युद्ध का वर्णन किया गया है.

वस्तुगत आधार

गुप्तजी ने इस कृति के लिए " मार्कण्डेय पुराण " के दुर्गा सप्तशती खण्ड का आधार लिया है. " गुप्तजी के वैचारिक विकास में सांप्रदायिक विद्वेषाग्नि के देश में प्रज्वलित होने के कारण एक विशिष्ट अवस्था आ गई थी. " [1] उन्होंने हिन्दुओं को सशक्त, पुरुषार्थी और संगठित होने का संदेश भी दिया है. उन्होंने धार्मिक समन्वय को राष्ट्रीय दृष्टि से देखा है और गांधीजी के विचारों के अनुरुप प्रतिपादित किया है.

" सप्तशती " में तीन भाग है- " पूर्वचरित्र " में मधुकैटभ का वध है, " मध्यम-चरित्र " में महिषासुर का वध और " उत्तर-चरित्र "

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य- कमलाकांत पाठक- पृ. 172

में शुंभ, निशुंभ, उनके सेनापति चंडमुंड और रक्तबीज के वध का वर्णन है.

इसकी कथा इस प्रकार है. सुरथ नामक राजा पर कोलाविध्वंसी नामक शत्रुओं ने आक्रमण किया. वह हारकर वन में चला गया. वहाँ मेधा ऋषि के आश्रम को देखा. उसी आश्रम में समाधि नामक एक वैश्य भी था. वह धनी था उसके धन का अपहरण करके उसको घर से निकाल दिया गया था. दोनों - समाधि एवं राजा सुरथ मेधा ऋषि के पास गए. राजा सुरथ सत्ता तंत्र में और समाधि वैश्स अर्थ तंत्र में फँसे हुए थे. जिससे उनको मोह हुआ. राजा ने प्रश्न किया कि महामाया कौन है ? तब ऋषि ने कहा कि वह महामाया देवी दुर्गा है. वह देवी नित्य होते हुए भी देवकार्य के लिए जन्म लेती है. प्रलय में विष्णु योगनिद्रा में लीन हो गये थे तब मधुकैटभ नामक दो दैत्य विष्णु के नाभिकमल में स्थित प्रजापति ब्रह्मा को मारने के लिए तैयार हुए. तब ब्रह्मा ने देवी की स्तुति की. उसका आशय विष्णु को जगाने का था. इस स्तुति में वैदिक और लौकिक नामों एवं विशेषणों द्वारा शक्ति का वर्णन किया गया है. वही जगत को रचती, पालती एवं संहार करती है. देवी को उदार भाव प्रकट करने के लिए कहा गया तब वह बाहर आई. उन्होंने मधुकैटभ नामक दो असुरों से युद्ध किया. असुरों ने विष्णु से वर माँगने को कहा. विष्णु ने कहा कि तुम मेरे लिए वध्य हो एवं बादमें वैसा ही हुआ.

इसके बाद महिषासुर वध की कथा आती है. अम्बिका का प्रभाव अतुलनीय है. देवी ने महिषासुर का वध किया.

" उत्तर-चरित्र " में शुंभ- निशुंभ वध का वर्णन है. अम्बिका को देखकर शुंभ ने अपना दूत भेजा. तब देवी ने कहा कि जो मुझे संग्राम में जीतेगा वही मेरा पति होगा. शुंभ- निशुंभ ने धूम्रलोचन को भेजा. लेकिन वह देवी की हुंकार से मर गया. तब चंड-मुंड को भेजा गया. लेकिन चण्डिका ने उसको हराया. बादमें, शुंभ- निशुंभ से युद्ध हुआ. इस प्रसंग में सप्तमातृकाओं का वर्णन किया गया है. " रक्तबीज " नामक असुर से भी देवी ने युद्ध किया. चामुण्डा ने उसको मारा. अंतमें, शुंभ-निशुंभ की

मृत्यु हुई. असुरों की पराजय होने से देवों ने नारायणी नाम से देवी की स्तुति की.

गुप्तजी रचित " शक्ति " की कथा इस प्रकार है-

दैत्यगण अत्याचार कर रहे थे. तब देवगण विवश हो गये. वे अमर होते हुए भी कुछ कर नहीं पाते थे. देवगण संगठित हो जाय तो उनकी विजय हो सकती है. इसलिए सर्वशक्तिमान देव की जरुरत थी. सब देवों ने अपने अलंकार और शस्त्र देकर देवी केरुप का निर्माण किया. इस प्रकार एक महान सत्ता प्रकट हुई. यह सुनकर दैत्यों में भय एवं विषाद फैल गया. सुर और मुनि शक्ति के गीत गाने लगे. फिरभी महिषासुर अपने कण्टक को दूर करना चाहता था. महिषासुर ने कहा कि छल, बल या कौशल से भी शत्रु का नाश करना चाहिए. यही हमारा धर्म है. जब उन्होंने देवी को देखा तब उनको विस्मय हुआ. दुर्गा, दैत्यों पर टूट पड़ी. असुर वर्ग आँख मूँद कर प्रहार करने लगा. वे देवी के सामने देखने में भी अशक्त थे. शक्ति एक थी असुर अगणित थे. फिरभी असुर अशक्तिमान थे. चिक्षुर दानव, गजारुढ चामर, कराल, वास्कल, उग्र, उदग्र आदि असुरों की मृत्यु के बाद शक्तिशाली महिषासुर आया. दुर्गा ने उसको भी यमपुर पहुँचा दिया. महिषासुर के बाद शुम्भ निशुंभ दुर्गा से युद्ध के लिए तैयार हुए. चण्ड-मुण्ड ने आकर दुर्गा के रुप का बखान किया. उसके सौन्दर्य को सुनकर वे कहने लगे कि उनके स्वामी के लिए वह योग्य है. तब अम्बा ने कहा कि -

" मुझे युद्ध में जीतेगा जो देव, दनुज मनुजात ।
होगा एक वही त्रिभुवन में मेरा वर विख्यात । " [1]

धूम्रलोचन की उसकी हुंकार मात्र से मृत्यु हुई. जितने दानव आये थे, वे सब मारे गये. इसके पश्चात, शुंभ- निशुंभ का वध किया. दुर्गा के हाथों से मरकर उनका मरण धन्य हो गया. अरिवर्ग भयभीत होकर भागने

---

1. शक्ति, पृ. 20

लगा और देव-गण आनन्दित एवं हर्षित होकर महाशक्ति के गीत गाने लगे. दुर्गा ने देवों के कष्ट को दूर किया. देवी ने उनको स्वर्ग- सुख भोगने के लिए कहते हुए कहा--

" उद्धत होकर असुर करेंगे जब जब अत्याचार,
तब तब जगदुद्धार करूँगी लूँगी मैं अवतार । "[1]

× × ×

कहा सुरों ने- " मिला हमें है विजय, सुयश, सुख, मान ।
पावें यह सब माँ, वे भी जो रक्खें तेरा ध्यान । " [2]

बादमें, " एवमस्तु " कहकर माँ अन्तर्धान हुई. इस प्रकार देवी ने देवों के क्लेश को दूर किया. शक्र ने सुर-पुर में प्रवेश किया. अंतमें, पुरदेवी से इन्द्र ने कहा कि अब भयभीत होने की जरुरत नहीं है क्योंकि सबने एकत्र होकर असुरों का संहार किया है. असुर रहते हुए भी सुरवर्ग ही अमरभूमि का अधिकारी है. जीते जी कोई भी स्वर्ग को प्राप्त नहीं कर सकता है. इन्द्र इन्द्रासन पर बैठा. गन्धर्व देवताओं के गौरव के गीत गाने लगे.

तुलना

" शक्ति " एवं " मार्कण्डेय पुराण " में राक्षसों के वध का उल्लेख हुआ है, परन्तु दोनों में अन्तर है. " शक्ति " का आरंभ दैत्यों के अत्याचारों से हुआ है. दैत्यों के अत्याचारों के कारण देवों ने देवी का निर्माण किया जिसने अनेक राक्षसों का वध किया. महिषासुर, धूम्रलोचन, चण्डमुण्ड एवं शुंभ- निशुंभ के वध का वर्णन है.

1. शक्ति, पृ. 24
2. वही, पृ. 24

" मार्कण्डेय पुराण " की कथानुसार राजा सुरथ मेधाऋषि के आश्रम में गया और उसके पूछने पर कि देवी कौन है ? उनका जन्म, कार्य आदि कैसे होते हैं ? तब इसके प्रत्युत्तर रुप में ऋषि ने मधुकैटभ, महिषासुर, धूम्रलोचन, चंडमुण्ड, रक्तबीज, शुंभ, निशुंभ के वध का उल्लेख किया. इसप्रकार कथा एक होते हुए भी प्रस्तुतीकरण के ढ़ंग में विभिन्नता है.

मौलिकता एवं आधुनिकता
==================

इस रचना के द्वारा कवि ने जन-शक्ति को संगठित होने का संदेश दिया है. गुप्तजी मानते हैं कि एक व्यक्ति कुछ नहीं कर पाता है. इसके लिए संगठन आवश्यक है,उनका एक ही लक्ष्य है, " मानव जिए और जूझे " इस खण्ड काव्य के पात्र भी मानवीय ही है. वे कहीं भी अमानवीय कार्य नहीं करते हैं.

इस काव्य में दिव्य पात्रों के अतिमानवीय कार्यों का विवरण अवश्य हुआ है. पर उन पात्रों को मानवीय रुप में प्रस्तुत किया गया है. माया के महत्व के द्वारा कवि ने अपनी भक्ति-भावना भी प्रकट की है. जिसप्रकार शक्ति अनेक देवों के बल से संगठित हो जाने के बाद दैत्यों का वध करती है. उसीप्रकार जनशक्ति को भी संगठित होकर विदेशी सत्ता से लड़ना चाहिए. अगर वे संगठित होकर विदेशी सत्ता का मुकाबला करेंगे तो उनको परतंत्रता से मुक्ति मिल जायगी. इस प्रकार इस प्रतीकात्मक काव्य में कवि की राष्ट्रीय भावना मुखर हुई है.

गुप्तजी ने " शक्ति " में हिन्दुओं को सशक्त, पुरुषार्थी एवं संगठित होने के लिए कहा है. गांधीजी की भाँति गुप्तजी ने भी राष्ट्रीय एवं धार्मिक समन्वय का प्रतिपादन किया है. उनके पात्र मानवीय होने के कारण उन्होंने अतिमानवीय कार्य नही किये हैं.

अभिव्यक्ति पक्ष

भाषा

" शक्ति " की भाषा समासगुण प्रधान एवं ओजमयी खड़ीबोली है. इसमें संस्कृत के अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है. जो ओजगुण के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं.

मुहावरे

धूम्रलोचन को अपने शौर्य का अभिमान था. लेकिन दुर्गा की हुंकार मात्र से ही उसका अभिमान नष्ट हो गया.

" माया की हुंकार मात्र में वह हो गया विलीन " [1] इसके अतिरिक्त यहाँ " असुर चौंधिया गये देखकर हीरक दन्त- विभास " [2], " पटके पैर दैत्य दुर्द्धर ने धँसी मेदिनी मूक " [3] आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है.

लोकोक्तियाँ

देवी की स्तुति करते हुए कहा गया है कि -

" तेरे बिना तीन तेरह हैं हम क्या सारे जीव " [4]

" संघ- शक्ति ही कलि- दैत्यों का मेटेगी आतंक " [5]

आदि लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है.

---

1. शक्ति, पृ. 21
2. वही, पृ. 20
3. वही, पृ. 15
4. वही, पृ. 23
5. वही, पृ. 8

सूक्तियाँ

दुर्गा ने असुरों से कहा कि उसको यह संसार बच्चे जैसा लगता है. अर्थात्, वह महान होने के कारण उसके लिए असुर भी छोटे हैं.

" बच्चे जैसा ही लगता है मुझको तो संसार । " [1]

संवाद-योजना

संवादों से इस रचना में नाटकीयता एवं चमत्कारिता उत्पन्न हो गई है. देखिये--

" हँसकर कहने लगी अम्बिका, सुनकर यों निज गीत,
करो स्वर्ग-सुख-भोग सर्वदा है सुख सुरवर्ग विनीत ।
जाय रसातल में ही तब तक दैत्य-समूह, सभीत,
पावे अपनी पाप-वृत्तियाँ जब तक आप न जीत ।
उद्धत होकर असुर करेंगे जब जब अत्याचार,
तब तब जगदुद्धार करूँगी लूँगी मैं अवतार । "
मैं प्रसन्न हूँ मांगो तुम सब मन चाहा वरदान । "
कहा सुरों ने - " मिला हमें है विजय, सुयश, सुख, मान ।
पावें यह सब माँ, वे भी जो रक्खें तेरा ध्यान । "
" एवमस्तु " कह हुई अम्बिका तत्क्षण अन्तर्धान " [2]

रस योजना

इस रचना में गुप्तजी ने वीर, भयानक, आदि रसों का सफल प्रयोग किया है-

" गरजी अट्टहास कर अम्बा देख ठट्ट के ठट्ट,
दहल उठे जल थल अम्बरतल घटा विकट संघट्ट ।
क्षण भर को हो गये शत्रु सब किंकर्तव्य विमूढ़,
समझे कौन महामाया की माया गर्भित गूढ़ .

---

1. शक्ति, पृ. 21
2. वही, पृ. 24

कामरुप घन पर बिजली-सी साहस- सिंहारुढ़,
टूट पड़ी दैत्यों पर दुर्गा अपने बल से व्यूढ़ ।
झुलस गई असुरों की आँखें उनको निकट निहार,
आँख मूँद कर तब वे मानों करने लगे प्रहार । "[1]

बिम्ब विधान

यहाँ दुर्गा का बिम्ब दृष्टव्य है.

" देवी में दर्शित था सबका तेज-पूर्ण प्रताप,
चरणों में विधि, हाथों में हरि, मुख में हर का आप ।
काल-रुप-भय था विशाल वह उनका केश-कलाप,
अंगुलि और नखों में थी वसु- विभाकरों की छाप । "[2]

पुरदेवी का चित्रण इस प्रकार है-

" स्वागतार्थ आई पुरदेवी लिये मलिन परिधान,
दीनमुखी, प्यासी सी पीड़ित मुरझी लता-समान ।
शिशिर-पद्मिनी-सी अति गद्गद पड़े न जो पहचान,
अमरावती पुरी का आहा ! ऐसा उलटा ध्यान । "[3]

अलंकार विधान

उपमा

कामरुप घन पर बिजली-सी साहस-सिंहारुढ़
टूट पड़ी दैत्यों पर दुर्गा अपने बल से व्यूढ़ । "[4]

उत्प्रेक्षा

" तब तो हुई शक्ति के बदले उन्हें यहाँ आसक्ति,
अपने दीप्ति दुर्ग में मानों बैठी दुर्गा शक्ति । "[5]

---

1. शक्ति, पृ. 12
2. वही, पृ. 9
3. वही, पृ. 25
4. वही, पृ. 12
5. वही, पृ. 19

छन्द विधान

" शक्ति " खण्डकाव्य कुण्डलिया छन्द में लिखा गया है. यह छन्द दोहा और रोला छन्द के योग से बनता है.

" और न लौटा लावेगा यह अपना विवश विलाप,
सोचो वह उपाय अब जिससे काट सको ये पाप ।
जो निरस्त्र हैं शस्त्र उन्हीं का होता है अभिशाप,
भोगेंगे निज वर-दानों के फल सदैव हम आप ।
रखते नहीं दान में हम जो शत्रु-मित्र का भेद ;
वही महत्व हमारा, उसका नहीं हमें कुछ खेद । "[1]
(ज)

झंकार

" झंकार " मैथिलीशरण गुप्त के आध्यात्मिक भक्ति परक गीतों का संकलन है. इसमें कवि के निर्माणकालिक रहस्यवादी प्रगीत संकलित हुए हैं. इन प्रगीतों की रचना सन 1913 और सन 1925 के बीच हुई थी. इसके अधिकांश गीत सन 1920 के पूर्व पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे. इसका पुस्तककार प्रकाशन सन 1930 में हुआ. उस समय साहित्य क्षेत्र में छायावाद का बोलबाला होने के कारण गुप्तजी ने भी उस शैली को अपनाया है. वस्तुतः मानव संबंधों के कवि होने के कारण गुप्तजी की काव्य प्रतिभा का माध्यम गीत न होकर कथा ही है. उनके लिए एक मात्र छायावादी गीतों की रचना संभव न थी. कवि का स्वानुभूत विषय होने के कारण इसके अधिकांश गीत भक्तिपरक हैं. किन्तु गीत के लिए जो माधुर्य अपेक्षित है वह गुप्तजी के संस्कारी हृदय के अनुकूल नहीं है. इसीलिये इसमें कवि की वृत्ति रमी नहीं है. यही कारण है कि इस काव्य के अनेक गीत प्रयत्नसाध्य प्रतीत होते हैं. आनन्दप्रकाश दीक्षित के मतानुसार " झंकार की रहस्यमयी प्रगीतियाँ नवयुग के साहित्यिक प्रभाव के कारण लिखी गई . वे कवि की स्वाभाविक प्रवृत्ति का परिणाम नहीं है. "[2]

---

1. शक्ति, पृ. 6

2. मैथिलीशरण गुप्त- आनन्दप्रकाश दीक्षित- पृ. 35

गुप्तजी ने सम्पूर्ण विश्व में परोक्ष सत्ता के महत्व का वर्णन करते हुए उस परोक्षसत्ता को अधम, दीन, असहाय, रोगी आदि विपन्नों की प्रार्थना, याचना, सेवा, श्रम और रोदन में पहचानने की चेष्टा की है. मानवसेवा में कवि ने ईश्वर पूजा का दर्शन किया है. आध्यात्मिक खोज में आत्माभिमान की निरर्थकता का परिचय दिया है. कहीं कवि ने अपने आराध्य की विशेषताओं का वर्णन किया है. तो कहीं सरल जीवन की अभिलाषा भी प्रकट हुई है.

" अध्यात्म-भावना गुप्तजी के वैष्णव संस्कारों के प्रतिकूल नहीं पड़ती, पर निर्गुण की उपासना उनकी प्रवृत्ति के विरुद्ध है. वे अप्रत्यक्ष के माध्यम से अपरोक्ष की खोज करते हैं. राम के द्वारा ब्रह्म का साक्षात्कार प्राप्त करना नहीं चाहते . " [1]

इस रचना में कवि ने आत्मा परमात्मा को एक माना है. और दोनों के भेद को निराधार बताया है -

" हुआ एक होकर अनेक वह
हम अनेक से एक,
वह हम बना और हम वह यों
अहा ! अपूर्व विवेक । " [2]

जीव को वीणा और ब्रह्म को उसका बजानेवाला कहा है जिससे अंशांशी रुप व्यक्त हुआ है -

" इसे बजाते हो तुम जब लों,
नाचेंगे हम सब भी तब लों,
चलने दो- न कहो कुछ कब लों-
यह क्रीड़ा कल्लोल ।
तुम्हारी वीणा है अनमोल ।। " [3]

---

1. मैथिलीशरण गुप्त- आनन्दप्रकाश दीक्षित, पृ. 35
2. झंकार, पृ. 20
3. वही, पृ. 11

यहाँ कवि छायावादी कवियों की भाँति खुलकर गीत नहीं गा सके हैं. फिरभी कवि ने नई काव्यानुभूति को अपनाया है. इस शरीर की समस्त नसों को उस ब्रह्म की तंत्री के तार कहा है-

" इस शरीर की सकल शिराएँ
हों तेरी तन्त्री के तार,
आघातों की क्या चिन्ता है,
उठने दे ऊँची झंकार ।
नाचे नियति, प्रकृति सुर साधे,
सब सुर हों सजीव, साकार,
देश देश में, काल काल में,
उठे गमक गहरी गुंजार ।
कर प्रहार, हाँ, कर प्रहार तू,
मार नहीं, यह तो है प्यार,
प्यारे, और कहूँ क्या तुझसे,
प्रस्तुत हूँ मैं, हूँ तैयार । " [1]

" अर्थ " में कवि कहते हैं कि जबतक वे अर्थ को ही सर्वस्व समझते रहे तबतक वे कुछ भी कर नहीं पाये. बादमें, जब उनको ज्ञान हुआ तब उन्होंने अर्थ को भूलकर ध्वनि को पसंद किया. वे हृतन्त्री के तार के साथ अपने स्वर को मिलाकर गाने लगे. यही सच्चा गीत था. जीवन था. अब कवि अर्थ को नहीं बल्कि ईश्वर-प्राप्ति को ही श्रेष्ठ समझने लगे. जबतक जीव पर माया का आवरण रहता है तबतक जीव संसार में भ्रमण करता है.

" जब तक रही अर्थ की मन में
मोहकारिणी माया,
तब तक कोई भाव भुवन का
भूल न मुझको भाया ।

---

1. झंकार, पृ. 8-9

नाची कितने नाच न जानें,
कठपुतली-सी काया,
मिटी न तृष्णा , मिला न जीवन,
बहुतेरा मुँह बाया । " [1]

माया के आवरण के कारण जीव-ब्रह्म की सत्ता का स्वीकार नहीं करता है . वह माया के पीछे भटकता रहता है. इसमें संसार को नश्वर कहा है क्योंकि संसार में जो प्रकाश है वह क्षण मात्र में नष्ट हो जाता है-

" सो जाने के लिए जगत का
यह प्रकाश है जाग रहा । " [2]

विशिष्टाद्वैतवाद में ब्रह्म को सर्वात्मा एवं सर्वेश्वर कहा गया है. उनको इस अखिल सृष्टि का पोषक एवं संहारक माना गया है. गुप्तजी ने भी राम को उत्पादक सिद्ध किया है. " तेरा दिया राम सब पावें जैसा मैंने पाया । " कहा है. इस प्रकार उनको सृष्टि का पालन-पोषण करने वाला बतलाया है. विशिष्टाद्वैतवाद में जगत को ब्रह्म का जड़ अंश कहा है. जगत को एक वृक्ष एवं फल, फूल, सुगंधि को इसके पदार्थ और ब्रह्म को उसकी जड़ कहा है. जो इसका पोषण करती है-

" फल में स्वादु, सुगन्ध कुसुम में,
पर है मूल कहाँ इस द्रुम में '
क्या कहते हो, वह है तुममें '
राम, तुम्हारी माया ।
अच्छा इन्द्रजाल दिखलाया । " [3]

वैष्णव भक्त ईश्वर को महान एवं सर्वशक्ति-सम्पन्न मानते हैं. और वे अपने इष्टदेव को सर्वस्व समर्पित कर देते हैं. वे ईश्वर को सर्वशक्ति सम्पन्न

1. झंकार, पृ. 13
2. वही, पृ.120
3. वही, पृ. 104

मानते हैं. सबकुछ उनका दिया हुआ है और उनको ही समर्पित कर देते हैं. कवि " यथेष्ट दान " में यथेष्ट दान अर्पित करता हुआ त्याग का आनन्द लेता है --

" दूँगा सब मैं न्यारे न्यारे ।
कुछ भी पास न रक्खूँगा मैं,
तभी त्याग -रस चक्खूँगा मैं ।
घर घर को, बाहर बाहर को,
आज आज को, कल कल को,
जल-थल जल-थल को नभ-नभ को,
अनिलानल अनिलानल को,
और तुम्हें क्या दूँगा प्यारे ?
जो तुम माँगोगे सो दूँगा,
बदले में कुछ भी न लूँगा । " [1]

गुप्तजी के मतानुसार जीव भगवान की शरण जाते हैं. वहाँ उसके दोष मिट जाते हैं, पाप नष्ट हो जाते हैं. माया मोह छूट जाते हैं और वे मुक्त हो जाते हैं.

" आया यह दीन आज चरण-शरण आया,
हाय ! सौ उपाय किये फल न एक पाया ।
× × ×
" सर्व अहंकार गर्व,
नाथ हुआ आज खर्व,
पाऊँ अब प्रगति पर्व,
मिटे मोह-माया ।" [2]

---

1. झंकार, पृ. 68
2. वही, पृ. 38

भक्तों को जैसी परिस्थिति में रहना पड़े उसी में आत्म संतोष का अनुभव करना चाहिए. यही भावना " क्षुद्र भावना " नामक कविता में भी मिलती है-

" यही होता है जगदाधार !
छोटा- सा घर आँगन होता
इतना ही परिवार !
छोटा खेत-द्वार पर होता
स्वजनों का समवाय,
थोड़ा- सा व्यय होता मेरा
थोड़ी-सी ही आय,
घर ही गाँव, गाँव ही मेरा
होता सब संसार,
यही होता है जगदाधार ! " [1]

" रहस्यवाद में अव्यक्त प्रियतम के प्रति विरह निवेदन होता है. वह प्रियतम निर्गुण, निराकार और निरुपाधि होता है किन्तु भक्त लोग ऐसे प्रियतम की कल्पना करते हैं जो सगुण- साकार हो. वे अपने इष्टदेव से वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं. इस व्यक्तिगत संबंध की स्थापना के निमित्त ही अवतारों की परिकल्पना की गई है. क्योंकि अवतार के अभाव में - किसी रुप आकार के अभाव में व्यक्तिगत संबंध संभव नहीं " [2]

मैथिलीशरण जी ने मुलत: भक्त होने के कारण भक्तिपरक प्रगीत लिखें हैं. " झंकार " के पहले प्रगीत में राम के प्रति निजी रागात्मकता का अंकन हुआ है -

" निर्बल का बल राम है ।
हृदय ! भय का क्या काम है ।।

---

1. झंकार, पृ. 120
2. मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्यान- कमलाकांत- पृ. 215

राम वही कि पतित-पावन जो
परम दया का धाम है,
इस भव- सागर से उद्धारक
तारक जिसका नाम है । "
हृदय भय का क्या काम है ।। " [1]

कवि का चित्त अवतारों के चरित गान में रस मग्न हो जाता है. इस स्वार्थी युग में भी " झंकार " के कवि भगवद्भजन में आनंद प्राप्त करते हैं.

" वे अवतार चरित नव नाना,
चित्त हुआ चिर चेरा । " [2]

" रमा है सब में राम ", हुआ एक होकर अनेक वह " हम अनेक से एक ", " तेरे घर के द्वार बहुत हैं किसमें होकर आऊँ मैं, " आदि उक्तियों ने अध्यात्म-दर्शन को जीवन के अनुकूल तत्व के रुप में उपस्थित किया है. " पुरुष पुरातन, बन जा फिर तू वही बाल गोपाल हरे " में सगुण को महत्व दिया है. इस काव्य की " अनुरोध, " त्यागी " , " दूती " खेल " " स्वयमागत " आदि में कवि ने आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना की है.

इसमें दो- चार प्रगीत कृष्ण-भक्ति के भी है. किन्तु कवि राम के उपासक होने से कृष्ण भक्ति-मूलक परम्परा-पिष्ट विचार ही मिलते हैं. अर्थात इसमें वैयक्तिकता अल्पांश में मिलती है-

" रथ-सूत हुए अपने भट के,
कि फँसे युग छोर कहीं पटके " [3]

इसी लिए यहाँ काव्यत्व का अभाव रहा है. कवि का सम्बन्ध

---

1. झंकार, पृ. 7
2. वही, पृ. 15
3. वही, पृ. 47

परम्परा प्राप्त ज्ञान से नहीं रहता है, अनुभूतिजन्य भावना से रहता है. फिरभी कृष्ण के ललित जीवन के संपर्क से माधुर्यभाव का संचार हुआ है-

" फिर याद पड़े रटके रटके,
व्रज- गोप- बधू दधि के मटके,
उनका कहना- " हटके ! हटके !
उलझी- सुलझी लट के लट के,
नटनागर, आज कहाँ अटके ? " [1]

कवि के भक्ति परक प्रगीत भी अच्छे हैं. " न ये नीति- शुष्क हैं, न राष्ट्रीयता से भाराक्रान्त वरन् इनमें कवि-हृदय के सहज उद्‌गार हैं. " [2]

संक्षेपमें, कवि ने आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना की है. गुप्तजी पर रवीन्द्रनाथ का प्रभाव मानवता की सेवा-भावना और आध्यात्मिक प्रेम की अनुभूति के रुप में पड़ा है. डा० कमलाकान्त पाठक के मतानुसार " झंकार " प्रतिनिधि काव्य अवश्य है। गुप्तजी की गीतिकला का प्राथमिक श्रेष्ठ गीतिकाव्य नहीं है, पर अपने युग का सौन्दर्य भी इसमें सुस्पष्ट है. इसकी सफलता प्राचीन पद-पद्धति को स्वानुभूति-व्यंजक प्रगीत काव्य शैली के रुप में नए सिरे से ढालने में देखी जा सकती है. " [3]

अंजलि और अर्ध्य

" अंजलि और अर्ध्य " महात्मा गांधीजी की मृत्यु के पश्चात लिखी गई शोक-गीति है. इसमें कवि ने गांधीजी के जीवन की मुख्य घटनाओं का उल्लेख किया है. बादमें, कवि ने राष्ट्रपिता के अपार गुणों एवं असंख्य उपकारों का वर्णन करते हुए भारतवासियों की कृतघ्नता का मार्मिक चित्र उपस्थित किया है.

---

1. झंकार, पृ. 47
2. मैथिलीशरण गुप्त कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता- उमाकान्त पृ. 217
3. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य-कमलाकांत पाठक, पृ. 537

गांधीजी की मृत्यु समग्र राष्ट्र के लिए एक करुण घटना थी. इस घटना से संवेदनशील कवि का हृदय चीत्कार कर उठा. कवि अपने इष्ट देव प्रभु राम से प्रार्थना करते हैं, कि हम अपने राष्ट्रपिता की मृत्यु का शोक कैसे सहन करें. क्योंकि उनकी हत्या एक हिन्दू के द्वारा ही की गई थी. भारतवासियों के लिए यह एक लज्जा की बात थी.

" अरे राम ! कैसे हम झेले
अपनी लज्जा उसका शोक ’
गया हमारे ही पापों से
अपना राष्ट्रपिता परलोक । " [1]

अब जब वे नहीं है तब कवि पूछते हैं कि अब भी क्या वैसे ही सूर्य और चन्द्र उदित होते हैं. लोगों का क्रम वैसा ही चलता है. मनुष्य होकर उसने मानव जाति का नाम ऊँचा किया है. उसने जिस काम का आरंभ किया था, उस काम को उनकी मृत्यु से विश्राम मिला है. हिन्दू हत्यारे ने उनकी हत्या की. जिससे अनेक हिन्दुओंकी भावनाओं को आघात पहुँचा है. उनकी हत्या से असंख्य मनुष्यों का आशा दीप बुझ गया. कवि प्रश्न उपस्थित करता है कि क्या अब हत्यारों के हाथों से हिन्दू-संस्कृति का रक्षण होगा.’ इस घटना को गुप्तजी हिन्दू जाति के लिए एक घोर कलंक मानते हैं.

अब कवि उनके गुणों का स्मरण करता है. वे एक ऐसे हिन्दू थे जो ब्राह्मण और अन्त्यज को समान दृष्टि से देखते थे. कवि कहते हैं कि ऐसे उच्च एवं उदार विचारों वाले व्यक्ति का हत्यारा कौन होगा ’. वर्षों की प्रसव-पीड़ा के बाद इस धरती ने उनसा पुत्र प्राप्त किया था. ऐसे महान व्यक्ति बार बार जन्म नहीं लेते. उनके आगमन से अंधकार में प्रकाश फैला. यहाँ कवि यह याद दिला रहे है कि भारत को स्वतंत्र करने का कार्य उन्होंने किया. अहिंसा नामक शस्त्र से उन्होंने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त किया. उनकी मृत्यु से आकाश एवं धरती दोनों दुःखी हो गये. अब उनकी याद

---

1. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 7

चिरस्थायी रखने के प्रयत्न किये जाते हैं. अब किसी को किसी का विश्वास नहीं रह गया है.

" अपनों से ही वंचित हों तो
जब फिर किसकी आस करें ?
बातें सभी बड़ी करते हैं
किस किस का विश्वास करें ? " [1]

जन-समूह कहता है कि स्वराज्य प्राप्त करने के बाद इसको क्या मिला? लेकिन सचमुच स्वराज्य प्राप्ति ही वर्षों की साधना का फल है. अनेक नेताओं ने तन, मन, धन सबकुछ मातृभूमि के लिए न्यौछावर किया है. आगे कवि कहता है कि बापू से ही भारत के लोग स्वाधीन हुए हैं. उनके जाने से लोगों की आशा ही चली गई है. समय-2 पर इस देश में अनेक जातियाँ आईं. जिन्होंने शासन किया और समय के साथ साथ अपने झंड़े फहराकर चली गई. कवि प्रश्न करता है कि यहाँ हमने यादवों गति का अनुसरण किया है. क्या इसीलिए तुम चले गये ? बादमें, कवि उनको लौटाने के लिए कहता है. उन्होंने जो प्राप्त किया था वहीं लुटा जा रहा है. स्वराज्य पाने के बाद उसे टिकाये रखने की विधि भी वह जानना चाहता है. स्वराज्य प्राप्त होने के बाद उनकी मृत्यु हुई. मानो वे स्वतंत्रता दिलाने के लिए ही आये थे और दिलाकर चले गये. उसे भोगने के लिए रुके नहीं. उनको धन, पद, मान सबकुछ सुलभ था. लेकिन उन्होंने सबकुछ त्याग दिया. अपना सर्वस्व दे दिया. उन्होंने सृष्टि और स्रष्टा को नई प्रतिष्ठा दी. जब वे छोटे थे तब एकबार स्कूल में एक निरीक्षक आये. उन्होंने अंग्रेजी के पाँच शब्द दिये. गाँधीजी ने " केटल " शब्द गलत लिखा था. शिक्षक ने इस गलत शब्द की ओर इंगित किया. परन्तु मोहनदास ने सत्य-धर्म का पालन किया. उस शब्द को वैसा ही रखा. उनको दंड का भय नहीं था. उनकी पत्नी भारत-वासियों की " बा " थी. छोटी उम्र में उन्होंने जो वचन लिये थे उसका

---

1. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 12

पालन किया. विदेश में भी वे विदेशियों से लड़े. पठान भी पिघल जाते थे. उनका प्रभाव सर्वत्र फैला हुआ था. पहले तो लोगों को लगा कि वह स्वप्नदर्शी है लेकिन बादमें उनके कर्म से परिचित हुए. उनके मंत्र से जनता जागृत हुई और स्वराज्य प्राप्ति के लिए कारागृह जाने लगे. स्त्रियाँ भी घर की चहार दीवारी को छोड़कर बाहर आने लगी. भारतवासियों का एक ही लक्ष्य था. उनको बाहर से देखा था भीतर से नहीं. उनकी जय बोलते थे परन्तु उनके गुणों से अपरिचित थे. वे विनयशील थे. उनमें अहम भाव नहीं था। वे अन्य से समझौता करते थे. कोई रावण क्यों न हो फिरभी उनके सम्मुख आकर वह झुक जाता था. उन्होंने अपनों की भूलों का भार स्वयं ले लिया था. दुःख को भी उन्होंने सुख की भाँति सहा. वे सादा जीवन और ऊँचे विचारों वाले थे. वे कठिन परिस्थिति में भी हँसते थे. विपक्षी भी अनुरक्त होकर उनके विश्वासी बन गए. उनको मिथ्या गर्व नहीं था. वे जिस ओर जाते थे उस ओर पावन-पथ हो जाता था.

" कहाँ मान सम्मुख का मन में
मानता तूने मिथ्या गर्व '
तू जिस ओर गया, आ पहुँचा
मूर्तिमन्त- सा पावन पर्व . " ¹

उन्होंने सत्य को विचारों और आचारों में अपनाया. दुर्वासा जैसे महान तपस्वी भी जिस क्रोध को जीत नहीं पाये थे, उस क्रोध को गांधीजी ने जीता. असहयोग से अपना विरोध प्रदर्शित करते थे. पर विनय को कभी नहीं छोड़ा . उनका शरीर अत्यंत दुर्बल था परन्तु उनमें अटल आत्मबल था. वे शठ व्यक्ति के प्रति भी अच्छा व्यवहार करते थे. उनका विरोधी भी मित्र बनकर उनसे विदा लेता था. कवि कहता है कि वह अजातशत्रु था. वे कठिन साधना और मुसीबतों को झेलते हुए आगे बढ़े. अनेक कष्ट सहने के बाद वे राष्ट्रपिता के आदरणीय पद पर पहुँचे थे. तपस्वी बनकर वे नारायण में लीन हो गए. उन्होंने भारतमाता के परतंत्रता के बंधन काट डाले एवं भारत को

---

1. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 27

स्वतंत्र किया. आज जब वे नहीं है तब जनता ने उनकी महानता का अनुभव किया. मृत्यु के बाद उनके कार्यों का महत्व समझा गया. उनके लिए सारा जगत सियाराम मय था. उन्होंने अपने हत्यारा से कुछ न कहा, बल्कि हाथ जोड़े. अर्थात गांधीजी ने अपने विरोधी से भी मित्र सा व्यवहार किया. जहाँ वे गये हैं वहाँ एक व्यक्ति का अभाव नहीं है. जब प्रजा उनके पथ पर अग्रसर होनेवाली थी, तभी उनकी मृत्यु हो गई. वे राम-राज्य के प्रशंसक थे. उनके विपक्षी भी सत्य-अहिंसा के समर्थक रहे हैं. उनको सभी के प्रति दया थी. वे मरते पशुओं की भी पीड़ा सह न सकते थे. उन्होंने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि पाँच व्रतों को महत्व दिया था. इसके कारण लोग खीझते थे लेकिन बादमें मुसकान को देखकर रीझ उठते थे. ऐसे संत ने भारत में जन्म लिया था. वे हरिजन को भी प्यार करते थे. इस प्रकार गांधीजी के आगमन से अछूतों का उद्धार हुआ. जो लोग निराशा में भटक रहे थे, उनको उन्होंने आशा का संबल दिया. उनका,सभी सम्मान करते थे . उनके आगमन से भारत का उत्थान हुआ. अंग्रेजों के पास शस्त्र थे और भारतीय निःशस्त्र थे फिरभी उन्हें अहिंसक युद्ध में सफलता मिली. मृत्यु हो जाने पर कवि हृदय प्रश्न करता है कि उस पारस को किसने चुरा लिया है. जिनके संस्पर्श से कोयले भी हीरे जैसे मूल्यवान बन जाते थे. कंकर भी चमक उठते थे. अब भारतवासियों में कोई शक्ति नहीं रही है. उनका आगमन एक आकस्मिक घटना थी. जो भारत परतंत्र था शोषित था उसको स्वतंत्र किया. सारे संसार को वे सुख एवं समृद्धि देने का प्रयत्न करते रहे. प्रजा ने जो पाप किये थे. उन्होंने उन पापों का प्रायश्चित किया. भारतवासियों ने हिंसा का सहारा लिया तब उन्होंने प्रायश्चित के रुप में अनशन किये. जहाँ गंगा-यमुना मिलती है वह भूमि तपोवन सी शुद्ध बन जाती है. गांधीजी में गंगा-यमुना की भाँति श्रद्धा-बुद्धि आकर मिले थे जिससे उनमें तपोवन- सी शुद्धि आ गई थी.

" हिली मिली गंगा-यमुना सी
तुझमें आकर श्रद्धा-बुद्धि,

खिली प्रयागरूपिणी जिसमें

पुण्य तपोवन की सी शुद्धि । "[1]

उन्होंने भारत को अभय बनाया. उनमें मनुष्यों के मन को देखने की शक्ति थी. जो उनके मन में आता था वही उनकी बुद्धि और वाणी में और बुद्धि और वाणी में जो आता था वही क्रिया में. अर्थात्, वे जो कुछ सोचते थे उसको मर्म रूप में भी करते थे. उनका शरीर दुर्बल होते हुए भी आत्मा बलवान थी, जिसके सहारे भारत को स्वतंत्र किया. उनमें कृष्ण, बुद्ध,ईसा तीनों की शक्ति थी.

" कृष्ण, बुद्ध किंवा ईसा का

मिलता कहाँ दरश हमको,

तात, यहाँ तुझमें तीनों का

मिला पुनीत परस हमको । "[2]

उनका आदर्श आज भी जीवंत है, सारा जगत अपने लिए जीता है. लेकिन वे दूसरों के लिए जीते रहे. उनकी मृत्यु के बाद उनको नवजीवन मिला. जैसा अद्भुत उनका जीवन था वैसा ही उनका मरण .

अंतमें, कवि ने यह इच्छा व्यक्त की है कि देश देश में गांधी जैसे व्यक्ति पैदा हो. जिससे इस पृथ्वी पर नन्दनवन हो जाये. उन्होंने सब देशों को निर्भय होने तथा सत्य-अहिंसा को अपनाने के लिए कहा है.

" संशय से शंकित हम सबने

पाया तुझसे शुभ सन्देश

सत्य-अहिंसा को अपनाओ,

निर्भय हो जाओ सब देश । "[3]

कवि उनको फिरसे एक बार आने के लिए कहता है. जब दूसरे मनुष्य

---

1. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 39
2. वही, पृ. 40
3. वही, पृ. 42

नरक की यात्रा सह रहे हैं तब उनकी आत्मा स्वर्ग के आनंद को कैसे सह सकती है ' कवि राम से कहता है कि उनको एक बार लौटा दो. उसके बिना वे राम से भी क्षमा नहीं पा सकेंगे. प्रथम गांधीजी से क्षमा माँगनी पड़ेगी.

" लौटा दो हे राम, उसे फिर
एक बार हम सबके बीच,
उसे छोड़कर क्या तुम से भी
क्षमा पा सकेंगे हम नीच । " [1]

कवि गांधीजी जैसे कर्मरत मनुष्य के जीवनादर्श को अपनाना चाहता है. ऐसे नेताको अंजलि देते समय कवि को दुःख होता है. और उनकी आँखें भर आती हैं.

" बापू, आज सभी आशाएँ
दृष्टि शून्य कर जाती हैं,
अंजलि और अर्घ्य देनेको
आँखें भर भर आती हैं. "[2]

इस रचना के द्वारा कवि ने आदर्श मानव, लोकनायक महात्मा गांधीजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है.

उच्छ्वास

" उच्छ्वास " गुप्तजी के निजी एवं पारिवारिक प्रसंगों पर आधारित रचनाओं का संकलन है. इसकी सभी कविताएँ प्रायः निजी एवं भाईयों की संतानों के आकस्मिक निधन पर कवि हृदय की मार्मिक अनुभूतियों के द्वारा लिखी गई हैं. ये हृदय को गहराई तक छूनेवाली हैं.

" अपहरण ", " प्रतिशोध ", " सुमन्त्र ", " सुदर्शन ", " आवागमन "

1. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 43
2. वही, पृ. 43

" अनुशोचना ", " कण्टक किरीट ", " क्षार-पारावार " आदि रचनाएँ मैथिलीशरण गुप्तने अपने दो पुत्रों- सुदर्शन एवं सुमन्त्र की मृत्यु के बाद लिखी थीं. पुत्रों की मृत्यु के बाद कवि हृदय दुःख से भी गया. उसने अपनी इन रचनाओं के द्वारा हृदय की व्यथा व्यक्त की है. ईश्वर ने अनेक पुत्र देकर कवि के लिए भोग के प्रसंग उपस्थित किये थे. लेकिन यह भोग कवि के भाग्य में नहीं था. उनके यहां कई पुत्रों ने जन्म लिया लेकिन उनकी क्रमशः मृत्यु हो गई. पुत्र धन अमूल्य था. खिलौने रुप में भी वह सुंदर था किन्तु असमय ही टूट गया. वह धन न तो लौटने वाला है अथवा न तो मिलनेवाला ही. तब कवि अपने मन को सांत्वना देता है कि जो आया था, वह चला गया है. जो होनेवाला था हो गया है. तब रोना व्यर्थ है. रोग, शोक, संताप आदि इस संसार के सभी भारों को वहन करना पड़ेगा जैसे यह काल बीत सके वैसे ही उसे बीताना पड़ेगा. कवि कहता है कि कितने ही प्रसंग ऐसे होते हैं कि जो मनुष्य को तत्वज्ञ बना देते हैं और तब संसार के समस्त रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं. वह अभागा था, जो अनेक प्रसंग मिलने पर भी जागृत नहीं हुआ. " सुदर्शन " में कवि कहते हैं कि आँगन में एक नये अंकुर को देखकर खुशी हुई. उसे पानी सिंचकर पाला पोसा. लेकिन प्रकृति के प्रकोप से वह पौधा मुरझा गया. वह नष्ट हो गया. वैसे ही, ईश्वर ने उनको अनेक पुत्र दिये. पुत्र जन्म से उन्हें खुशी होती है थी, किन्तु विधाता के विधान को कौन टाल सकता है चाहे उसे कितने ही लाड-प्यार से पाला जाये और उसके लिए खून-पसीना एक किया जाये. अंततः वह पुत्र-धन असमय में ही छिन लिया जाता है. प्रकृति के सम्मुख मनुष्य असहाय है. अतएव कवि ने पेड़ की भाँति तटस्थ रहने की सलाह दी है. जिससे दुःख कम होता है. " आवागमन " में कवि ने उसे आवागमन के चक्कर से मुक्त होने के लिए कहा है. वह नाता जोड़कर आता है और नाता तोड़कर चला जाता है. धरती पर कदम रखने से पूर्व ही उसे वापिस बुला लिया गया. " कण्टक-किरीट " में कवि कहता है कि जब ईश्वर ने फूल को चुनकर ले लिया है. तब रोना व्यर्थ है. क्योंकि इस संसार के सारे कार्य नियति के वश रहते हैं. जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जन्म यह क्रम चलता रहता है. इस क्षणभंगुर संसार में किसी का भरोसा

नहीं है. सब जीवन के जंजाल में फँसे हैं. मनुष्य बाह्य आवरण में फँसा हुआ है. वे पूछते हैं कि क्या ईश्वर अबोध बालक को नहीं बचायेगा ? कवि ऐसी परिस्थिति को सहने का बल माँगते हैं. " क्षार-परिवार " समुद्र को सम्बोधन कर लिखी गई रचना है. इसमें कवि ने मर्यादा नहीं छोड़ने के लिए और धीरज धरने के लिए कहा है. उसको रुकने के लिए कहा है जिससे उसका पानी स्वच्छ ही रहे. उसका हाँफना, उफनना भी उचित है. परन्तु कवि ने उसको ठहरने के लिए कहा है. और सहिष्णुता का त्याग नहीं करने के लिए कहा है. ध्वंस के साथ ही निर्माण होता है. समुद्र को शान्त रहने के लिए कहा है. उसीप्रकार, जब पुत्र-धन चला ही गया है तब धैर्य रखना चाहिए और समुद्र की भाँति विशाल और उदार हृदय रखना चाहिए. मृत्यु के पश्चात् जन्म होता है. यहाँ कवि के हृदय की व्यथा प्रकट हुई है. वे पुत्र की मृत्यु से दुःखी और विह्वल हो गये थे. " प्रतिशोध " रचना के द्वारा कवि ने मनुष्य को कर्म-गति का महत्व समझाया है. इसमें वर्णित ठाकुर और उसके पुत्र की कथा के द्वारा यह सीख दी है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही उसे फल मिलता है. मनुष्य कितना प्रयत्न करे लेकिन कर्म की गति को कोई टाल नहीं सकता. ठाकुर ने ध्यान मग्न साँप को मार डाला था. इसलिए इसका प्रतिशोध उसने पुत्र के रुप में लिया. उसने उस साँप की अंतिम क्रिया की थी. इसलिए वह ब्याह के पहले मर गया. जिससे पिता को विधवा बधू न देखना पड़े और उस पैसे का व्यय वह अच्छे कार्य में कर सके. अंतमें, उसने कहा कि उसकी आशा रखना व्यर्थ है क्योंकि अच्छा या बुरा सबकुछ कर्माधीन है. तब दुःख नहीं करना चाहिए. इस उदाहरण के द्वारा कवि अपने परिवार को सांत्वना देते हैं कि जो बच्चे मर गये हैं, वे हमारे भाग्य में नहीं थे. वे भी कर्म के अनुसार मिले थे और अब वे कर्मानुसार ही बिछुड़ गये हैं. तब शोक करना व्यर्थ है.

" नक्षत्र-निपात " और " पुष्पांजलि " सियारामशरण के शिशु पुरुषोत्तम की मृत्यु पर लिखी गई रचनाएँ हैं. वह पुत्र स्वजनों के बीच चमकता था और उसकी ओर सब आशा की दृष्टि से देखते थे. लेकिन असमय ही वह

सबको छोड़कर चला गया. उसकी मृत्यु से ऐसा लगा कि मानों नभ से एक रत्न गिर गया हो. इससे उसके हृदय पर शोक छा गया. सारे तारे उस रत्न को गिरता हुआ देखकर आँसू बहाने लगे. उसे इन्दु भी बचा नहीं पाया. कवि-हृदय पुत्र को कितना प्यार करता था लेकिन एक दिन वह मर गया. उसे कोई बचा नहीं पाया. इसप्रकार, यहाँ कवि कहते हैं कि काल निष्ठुर है. उसके आगे मनुष्य कुछ भी कर नहीं पाता है. " पुष्पांजलि " में भी कवि-हृदय की वेदना है. कवि के सौभाग्य से पुत्र-धन प्राप्त हुआ था. जो उस वंश में खिला था. वह फूल अचानक झड़ गया. पुत्र जन्म से उषा का उदय हुआ और मृत्यु से दीपक बुझ गया. वह रूप, रंग, गन्ध सबकुछ लेकर चला गया. इतने में श्री निवास (रामकिशोर जी का पुत्र) ने जन्म लिया उसमें भी उस फूल- सा मधुर हास था. लेकिन वह भी चला गया. सूक्ष्म चला गया और स्थूल रह गया. अंतमें, कवि पुत्र को अंजलि देते हैं.

कवि के सबसे छोटेभाई चारुशीलाशरण के पुत्र रामेश्वर की मृत्यु पर संवत 1983 में " राम, " " पलायित ", " पुकार " भग्न-तन्त्र " और " कीर " रचनाएँ लिखी गई थीं. " राम " में कवि ने राम को प्रार्थना करते हुए कहा है कि सब पर वैसे ही अनुकूल हो जैसे कवि पर हुए थे. उनको जो पुत्र-धन दिया था वैसे सबको दे. कवि उस धन को रख नहीं पाये लेकिन सब रख पावे. कितने यत्न करने के बाद भी वे उसे रख नहीं पाये. उसे वे न तो कुछ दे पाये थे और न तो उससे कुछ ले पाये थे. कोई जितना प्रेम-सम्मान दे सकता है, उतना उसे दिया था. इतना होते हुए भी कवि उसे रख नहीं पाये. तब सब लोग उसे भूलने के लिए कहते हैं. उसको भुलाने वाला ज्ञान भी कैसा होगा ? वह चेतना भी कैसी होगी ? यह सब कवि के लिए असहय हैं. सब उनको धीरज रखने के लिए और नहीं रोने के लिए कहते हैं. जो होनेवाला था वह हो गया है. लेकिन कवि यह समझ नहीं पाता है कि जो हुआ है वह कैसे हुआ ? उसको सब छली, मोहक, वंचक कहने लगे. लेकिन वह छली नहीं था. वह तपोभ्रष्ट था. जो यहाँ ममत्व एवं मान पाकर रुक गया था. अगर यह घर उसके लिए योग्य नहीं था तो वह आया ही क्यों ? उसके चले जाने से कवि को ऐसा लगा कि उसका एक अंग ही चला गया हो.

सबकुछ फीका पड़ गया. तब कवि दीन होकर प्रार्थना करता है. " पलायित " में कवि ने पुत्र को नहीं जाने के लिए कहा है. उसके बिना सारा संसार शून्य हो गया है. शोक छा गया है. कवि उसके लिए द्वार खुला रखता है और वापस लौटने के लिए कहता है. आगे कवि कहता है कि अगर तुझे जाना ही था तो तू मुझे भी अपने साथ लेकर जाता. कवि उसे कितना प्यार करता था. उसके लिए वह स्वयं बिकने के लिए तैयार है. वह स्वयं बिककर पुत्र को वस्त्रालंकार, श्रृंगार आदि देना चाहता था लेकिन वह चला गया. उसके जाने से झंकार लुप्त हो गई. अब भीषण टंकार सुनाई पड़ती है. कवि उसके पीछे दौड़ता है. जब कवि उसको देख नहीं पाता है तब उसे अपनी ओर देखने के लिए कहता है. " पुकार " में कवि राम से पूछते है कि तुम्हारा धाम कहाँ है ? यहाँ लाचार होकर अनेक शिशु अकाल मृत्यु से मर रहे हैं. पुत्र को नहीं मरने के लिए कहा है उसे फूलने के लिए जीवित रहने के लिए कहा है. परन्तु नन्दनवन का वह पौधा इस धरती पर रह नहीं सका. जिसका ताप वह सह नहीं सका, उसको कवि कैसे सहेंगे ? उस शिशु की बातें कवि को याद आती है. उसने किसी जन्म का वैर लिया है. लेकिन कवि ने इस जन्म में उसे प्यार किया था. वह हरा हरा पौधा था जो सूख गया है. वह छोटा- सा बालक मर गया. उसको कोई बचा नहीं पाया. सब बच्चे रोते हैं लेकिन वह तो हँसता था. कवि उसको लेकर जाता था लेकिन आज वह अकेला जा रहा है. कवि ने उसको डाँटा भी होगा यह बात कवि के हृदय में काँटे के समान खटक रही है. लेकिन जब काँटा ही नहीं है तब उसे कौन निकालेगा ? उसको जैसा पहनाया जाता था वैसा ही पहन लेता था. उसने गहनों आदि की भी इच्छा नहीं थी. कवि को लगता है कि वह लौटकर आ रहा है लेकिन जाने-वाला कोई आता नहीं है. कवि कहता है कि तू आकर मेरी आशा पूरी कर. कवि हीरा-मोती मानिक की इच्छा नहीं करता है. उसे पुत्र धन की ही इच्छा है. " कीर " में भी वही वेदना है. कवि कीर को वापिस लौटने के लिए कहता है. वह असहाय हो गया है तब वह पुत्र की इच्छा करता है. उसके चले जाने से पिंजरा शून्य हो गया है. उसकी खीर अछूती पडी है. कवि ने उसके

लिए संसार का संधान कर डाला, परन्तु उस कीर का पता नहीं चला. कवि के सारे प्रयत्न निष्फल गये. वह राम का नाम स्मरण करता था. इसलिए वह पूछता है कि राम का धाम कहा हैं ? " भग्न-तन्त्र " में भी विलाप सुनाई पड़ता है. पुत्र की मृत्यु हो जाने से अब आलाप को स्थान नहीं है. इसमें कवि के हृदय की मनोव्यथा प्रकट हुई है.

" निरवलम्ब " कवि के काका के देहान्त के पश्चात सं. 1978 में लिखी गई रचना है. अपने पुत्र और काका की मृत्यु हो जाने से कवि असहाय हो जाते हैं. ऐसी असहाय स्थिति में कवि को ईश्वर का ही सहारा रहता है. प्रकाश के बुझ जाने से विश्व भी संकुचित हो गया है. सब दूर भाग गये हैं तब कवि अपने हृदय देव को जागने के लिए कहता है. सब उन्हें छोड़कर चले गये हैं तब कवि को ईश्वर का ही अवलम्बन है.

" समाधि " सं. 1994 वि. में लिखी गई थी. इसकी रचना कवि ने मुन्शी अजमेरीजी के निधन पर की थी. मुंशीजी कवि के कुटुम्बी जैसे थे. वह चिरदानी होने के बाद भी अंत में याचक ही रहा. मृत्यु तक वे अमृत पिलाते रहें लेकिन उन्होंने खारा पानी ही माँगा. कवि कितना रो-गालें परन्तु अब वह सुननेवाला नहीं है. बादमें, कवि ने मुंशीजी को सुखपूर्वक सोने के लिए कहा है. जगत की मौज भी उसको मिली थी. तब काल क्रूर नहीं था. और वह रूठा भी नहीं था. उस राज-रत्न को खोजते हुए कवि हार गया है. अब कवि कितना रो-गालें परन्तु कोई सुननेवाला नहीं है. अंतमें, कवि कहता है कि मुंशीजी उनके लिए ही लौटकर आयेगें और किसी के लिए नहीं. यहाँ उनका मित्र-प्रेम द्रष्टव्य है.

" चयन " सं. 1977 में मित्र के वियोग पर लिखी गई थी. और " चक्रवाकी " सं. 1992 में मित्र की विधवा को सम्बोधन करके लिखी गई रचना है. उनका मित्र उनको छोड़कर चला गया है तब कवि कहता है कि तू हमको छोड़कर किसे अपनायेगा ? वह जा रहा है लेकिन इसमें उसके वश की बात नहीं है. वह मित्र देव-कण्ठ का हार हो गया है लेकिन कवि अपना

हतभाग्य समझते हैं कि वे काँटों में पड़ गये हैं. " चक्रवाकी " में कवि ने मित्र की विधवा को शान्त रहने की सलाह दी है. शान्त रहने का कार्य मुश्किल है फिरभी कवि उसको धैर्य धरने के लिए कहता है. जिससे मित्र की आत्मा को शान्ति मिलें.

" उच्छ्वास " की रचनाएँ कवि ने अपने स्वजनों के स्मारक के रुप में लिखी है. जो स्वजनों की मृत्यु के बाद लिखी गई है. इसकी अधिकांश रचनाएँ कवि ने पुत्र-निधन पर लिखी थी. इसमें कवि के हृदय का हाहाकार सरल एवं स्पष्ट ढंग से व्यंजित हुआ है.

" सांत्वना " एक दीर्घ प्रगीतात्मक रचना है जो गुप्तजी ने सुदर्शन की मृत्यु पर लिखी थी. इस रचना में अनेक भावानुभूतियों की एक साथ व्यंजना हुई है. कवि को अपने पुत्र की मृत्यु से अत्यंत दुःख हुआ. जहाँ सुदर्शन गया है वहाँ पुरूषोत्तम,काका का रामेश्वर , श्रीहर्ष और सुमन्त्र है. इसीलिए कवि को सुदर्शन की कोई चिन्ता नहीं है. कवि को अपनी चिन्ता है. क्योंकि उसे एक भी पुत्र का सहारा नहीं रहा.

कवि के यहाँ कई पुत्रों ने जन्म लिया लेकिन सबकी असमय में मृत्यु हो गई. श्रीहर्ष की मृत्यु और सुदर्शन का आगमन हुआ. सुमंत्र की चेचक में और सुदर्शन की जलोदर में मृत्यु हुई. इससे कवि को दुःख हुआ. " सांत्वना " में कवि ने अपनी ही नहीं, अपनी धर्म पत्नी की पीड़ा का भी मार्मिक वर्णन किया है.

इसके आरंभ में कवि राम से पूछते है कि तुम्हारे यहाँ यह कैसा न्याय और निर्णय है ? क्योंकि यहाँ उनका पुत्र मर रहा है. उसकी अंतिम वेला है. अर्द्ध रात्रि में हवा की लहरें आ रही है. ऐसा लगता है कि वायु प्रतिक्षण खिड़कियों को खोलना चाहती है. उस समय जाड़े की ऋतु में शीत के कारण सब मनुष्य अपने -2 घर में सो रहे हैं. तब दो व्यक्ति कवि और कवि पत्नी जाग रहे हैं. यह दृश्य देखकर ऐसा लगता है कि खिड़कियों की आवाज़ के

कारण वे भयभीत होकर जाग रहे हैं. उनको भय लग रहा है कि कोई चोर घुस आवेगा. उनको उस चोर का भय है जो पुत्र को ले जाने के लिए आता है. यह पुत्र-धन दम्पति के लिए सर्वस्व है. घर में तीन खाटें हैं. पुत्र की अंतिम वेला है तब खाट की दोनों ओर माता-पिता बैठे हैं और बीच में उनका पुत्र सो रहा है जो क्षीण एवं रुग्ण था. उसको खेलने के लिए खिलौने एवं उपचार के लिए चूर्ण, गोलियाँ आदि दिये जाते हैं. लेकिन उसने कितने दिन से अन्न तो क्या पानी भी नहीं पीया था. यह बच्चा दुबला-पतला हो गया है. ऐसा लगता था कि क्या उसकी आँखें संसार को देखे विना ही बंद हो जायेगी. यहाँ रोगी शिशु के रोग के बारे में अपना मंतव्य प्रदर्शित करते हैं. कोई कहता है कि उसके यकृत में विकार है तो कोई कहता है कि उसकी पसलियों के नीचे का अवयव बढ़ता जा रहा है. तब शस्त्र-क्रिया ही इसका उपाय है. लेकिन इसमें कोई सम्मति देने के लिए तैयार नहीं है. क्योंकि कितने युग से परिश्रम हो रहा है, परन्तु आजतक मनुष्य का ज्ञान अनिश्चित है. उसकी सारी आयु अभी पड़ी है लेकिन जीवन ही नहीं है तब क्या ' ज्योति के बिना केवल तेल से दीपक कैसे जल सकता है. बालक निश्चिन्त होकर सो रहा है लेकिन उसकी माँ रो रही है. पिता भी शून्यमनस्क होकर बैठ गये हैं. फिरसे कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि तू और पुत्र न दे लेकिन जो दिये हैं उन्हें तो रहने दे. एक के बाद दूसरे पुत्र की मृत्यु होने से कवि पत्नी दुःखी हो गई. पुत्र का जन्म होता था वहाँ ही वह मर जाता था. ईश्वर ने रत्न रुप में अँगारे दिये. जो माता को दुःख पहुँचाकर बुझ गये. वह अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहती है. जिससे बच्चे जीवित रहे. जब प्रभु रूठा है तब उसे सबकुछ झूठा जान पड़ता है. उसका हृदय टूट गया. उसको धीरज भी नहीं रहा. वह रोने लगती है. तब कवि पत्नी को सांत्वना देता हुआ कहता है कि राम जैसे रखे वैसे ही रहना चाहिए. मनुष्य जैसा चाहता है वैसा नहीं होता है. सबकुछ ईश्वरा-धीन है. प्रकृति के नियम के अनुसार ही सब चलता है. इसमें मनुष्य कुछ भी कर नहीं पाता है. मनुष्य प्रकृति के नियम को उलट नहीं सकता है. प्रभु की

इच्छा के बिना कुछ नहीं होता है. जब उसकी इच्छा नहीं है तब पुत्र कैसे जीवित रहेगा ? अर्थात्, जब उनके भाग्य में पुत्र ही नहीं है तब रोने से क्या फायदा ? उस सत्ता के आगे मनुष्य तुच्छ है. वह सबका स्वामी है. वह मनुष्य का अहित नहीं करता है. वह अच्छा कार्य करता है. मनुष्य को अपना कर्तव्य करना चाहिये. फल ईश्वर के हाथ में है. मनुष्य को सिर्फ यत्न करना चाहिए. विघ्नों से जूझना चाहिए. कवि पत्नी को नहीं घबराने के लिए कहता है. ईश्वर सर्वशक्तिमान है. कवि पत्नी को कहता है कि दूसरा पुत्र जो हृष्ट पुष्ट है वह तुम्हारा और यह रोगी मेरा. जिससे उसका दुःख कम हो जाय. लेकिन हँसना भी उसके भाग्य में नहीं रहा. जब उसको बड़े बेटे की आशा नहीं रही तब वे छोटे की ओर देखने लगे. यह मनुष्य का स्वभाव है. जब वह बड़े पुत्र से निराश होता है, तब वह छोटे की ओर आशा लगाये बैठता है, परन्तु नियति को यह पसंद नहीं था. वे छोटे की ओर भी न देख सके. वह भी मर गया. यह विधि की कितनी करुणता है. उसको सारी सृष्टि क्षणभंगुर लग रही है. ईश्वर ने उसके संसार को सोने का बनाकर मिट्टी में मिला दिया है. पुत्र-धन प्राप्त होने से उसको आनन्द हुआ और उसके जाने से दुःख. जब सबकुछ उलट गया है तब वह राम से पूछता है कि अब क्या मैं " मरा- मरा जपूँ ?" उसने आँखें बंद कर दी है तब कवि पूछता है कि क्या इस भव के स्वप्न तेरे लिए दुःसह थे ? वह भीतर क्या देख रहा है ? कवि ने उसको जागृत होने के लिए कहा है. लेकिन उसकी साँस चलती नहीं है. सूर्य,चन्द्र-तारे सबकुछ वही है फिरभी कवि चारों ओर अँधेरा छा जाने से देख नहीं पाता है. पुत्र के बिना सर्वत्र अन्धेरा छा गया है. कवि को पुत्र की क्रियायें, चेष्टाएँ, बातें याद आती है. कवि उसको कितना प्यार करता था लेकिन वह उन्हें छोड़कर चला गया. वह बालक कोमल था. उसकी मृत्यु से कवि को आघात पहुँचा. उसका किलकना, गोदी में आना, कुटिलता से हँसना, खाट की परिक्रमा देना आदि उसकी क्रीड़ाएँ कवि को याद आ रही है. उससे पूछता है कि तू मरने वाला ही था तो आया ही क्यों ? उसके आने से आनंद हुआ और जाने से दुःख. कवि अपने हृदय को दुःख सहने के लिए कहता है. अब जब पुत्र मर गया है, तब कवि कहता है कि इतना आनंद मनाना चाहिए कि जो सुख की आशा

उन्हें न थी वही मिला. पुत्र को देखकर सुख मिला. उसने अल्प समय के लिए सम्बन्ध जोड़ा, वह भी कम नहीं है. उसको पुत्र-धन मिला इतना ही काफी है, जिससे थोड़ा बहुत रस मिला. कवि को इस बात का हर्ष है कि थोड़े समय के लिए पुत्र का आनंद मिला इतना ही काफी है. कवि स्वयं विष पीता था और पुत्र को अमृत पिलाता था. जब पुत्र ने दृष्टि बदल ली है तब कवि किसी और की आशा नहीं कर सका. वह एक क्षण के लिए आया था. बादमें सुदर्शन ने साँस ली. यह पुत्र रोगी था. जो स्वस्थ और छोटा था वही जीवित न रह पाया तब यह रोगी कैसे रह सकता है ? खिलाड़ी के चले जाने के बाद खेल-खिलौने सब पड़े हैं. वह कहाँ गया है इसका भी पता नहीं है. तब लोग अपनी इच्छानुसार अनुमान लगाते हैं. खिलाड़ी के बिना खेल और खिलौने काम में नहीं आते हैं. कवि का खिलौना वह बालक था. उसके गाने में और रोने में आकर्षण था. वह जो चाहता था वह लेता था. उसके वस्त्रों को कोई पहननेवाला नहीं है. माँ कहती है कि अगर तेरी प्रसव-पीड़िता वन्ध्या होती तो ही अच्छा होता. क्योंकि वह बीच में ही नाता तोड़कर जो चला गया है. उसके बिना खेत, रंग, ढंग सब पीला पड़ गया है. हँसते हुए रोना आ जाता है. काम करते हुए उसकी याद आने से जी ऊबने लगता है. कवि उसे पुकार भी नहीं पाता है. पहले तो वह लेखनी छिनकर कहता था कि अब न लिखो, मुझसे खेलो, लेकिन आज ऐसा कहनेवाला भी कोई नहीं है. यहाँ कवि को पुत्र की बाल-चेष्टाएँ याद आती है. वह रोगी होने के कारण कड़ी औषधि भी पीता था. तिथियाँ, वार, दिन सब आकर चले जायेंगे किन्तु पुत्र लौटकर नहीं आवेगा. व्रत-पर्व के समय जब प्रसाद बँटेगा तब उसका हाथ नहीं बढ़ेगा. कवि को बाहर से आने में देर होती तब घर के लोग उसकी राह देखेंगे. लेकिन वह न तो उन लोगों के साथ होगा या न तो कवि के साथ. यह सोचते-2 पुत्र-स्मृति से कवि मूढ़ हो जाता है. लेकिन कैसे भी हो जगत में जीना ही है. यह जगत प्रवाह बहता आया है. इसमें कैसे भी हो जीना ही है. इसमें हर्ष विषाद आता है. यहाँ मिले हुए बिछड़ जाते हैं. तब यह प्रश्न होता है कि बिछुड़ने वाले कहाँ मिलेंगे ?

जो शैशव में चला जाता है उसके लिए यह भव योग्य नहीं था या तो वह इस भव के लिए योग्य नहीं था. अगर ऐसा ही है तो वह आया ही क्यों ? यहाँ उसकी आज्ञा का पालन होता था. वह छोटा था फिरभी अधिकारी रहा. उसने मरकर कवि से किस जन्म का वैर लिया है. कवि का प्यार उसने नहीं देखा. " छोटे " युग में कवि ने सुदर्शन को पाया था. उसने आकर सबको बचा लिया. स्वर्गलोक में जिसे कल्पवृक्ष कहते हैं. कवि का कल्पवृक्ष पुत्र था, जो धरती पर उसको मिला था. उसको उठने के लिए और रोग, शोक को दूर करने के लिए कहा है. जिससे अरण्य में वसन्त-सा आनंद मिले. पिता-पुत्र दो देह होते हुए भी प्राण एक था. वह आशा का केन्द्र, उत्सव का आधार, आँखों का तारा था. अँधियारे में दीप था. वह कवि के भोजन का स्वाद था. वह कवि से अधिक शील-गुण सम्पन्न था. उसके बिना कवि कहाँ जाय ? उसके बिना स्वर्ग भी नरक जैसा लग रहा है. वह ऐसा दर्पण था जिसमें कवि आत्म रुप देखता था. कवि उसके पीछे चलने के लिए तैयार हो जाते है. कवि मृत्यु को पूछता है कि तुझे यहाँ किसने भेजा ? स्रष्टा हत्यारा नहीं है. उसके भी कुछ नियम रहते हैं. पुत्र- चला गया है परन्तु वही लुटेरा रह गया है. कवि विजयी बनकर उसे बाँधना चाहता है. मृत्यु को जीवन आत्मसमर्पण करे तो इसमें जीवन का नहीं, मनुष्य का दोष है. जीवन चला जाता है उसे कोई रख नहीं पाता है. फिरभी वह लौट आता है. ज्ञान शाप है, अज्ञान-पाप है. किन्तु यह उलटी धारा नहीं बहेगी. इसका भी बोध होगा. जीवन-जन्म अनन्त है. इसकी भी शोध होगी. कवि कहता है कि अगर मैं ईश्वर को दे न सकूँ तो उनसे लेना ही व्यर्थ है. कवि कहता है कि जब तू लेनेवाला था तब मैंने तुझसे क्यों लिया ? इसमें कवि की भूल है. वह उसकी दी हुई थी और उन्होंने वापस लिया है. कवि अपात्र था. उसको बालक दिया गया. इसलिए आभार व्यक्त करना चाहिए. कवि इस युग के लिए योग्य न हो पाया. इसलिए आज रो रहा है. सुपात्र के लिए योग्य बनना चाहिए. आगे कवि कहता है कि ईश्वर के गूढ़ रहस्य को कोई समझ नहीं पाता है. कवि पत्नी रो रही है उसे कौन रोक सकेगा ? रोने के बाद भी वह पुत्र मिलनेवाला नहीं

है. उसने जो दिया था वही किसीने आकर छीन लिया है. वह उससे वंचित हो गई हैं. जिसको जतन से पाला था. उसके लिए वह खाना, सोना सबकुछ भूल गई थी. रोगी जैसा खाती थी. वह स्वयं गीले में सोकर उसे सूखे में सुलाती थी. उस पर उसने रुप, यौवन सबकुछ न्यौछावर कर दिया था, एवं दासीपन स्वीकार किया था. जिसको रक्तसार पिलाकर पाला था वही आज मुँह मोड़कर चला गया है. माँ होकर उसको अपने पुत्र को खोना पड़ा. उसके लिए कवि पत्नी ने अनेक उपवास किये, सुख- भोग का त्याग किया था. भोगिनी होकर भी वह योगिनी की भाँति रहती थी. उसने अपना सर्वस्व त्यागर पुत्र-धन को प्राप्त किया था. उसकी प्राप्ति से सुख मिला. लेकिन वह सुख भी क्षणिक था. उसको विधाता ने छीन लिया. उसके जन्म के पहले भी कवि एवं कवि-पत्नी दो थे और अब उसकी मृत्यु के बाद भी वे दो ही रह गये हैं. आगे कवि पत्नी को सांत्वना देता हुआ कहता है कि यह दुःख उन पर ही नहीं पड़ा है. इसके पहले भी बहुतों ने अनेक दुःख सहन किये हैं. पड़ोसी के युवक की मृत्यु से उसकी विधवा पत्नी उजाला को दुःख सहना पड़ा. पिता पुत्र पर बहुत भार नहीं होता है. पर जो व्यक्ति परिवार का भार उठाता है उसकी मृत्यु से अधिक आघात पहुँचता है. इस प्रकार कितने मनुष्यों का भाग्य फूट जाता है. इस दृष्टि से देखा जाय तो हम सस्ते में छूटे हैं. क्योंकि वह बच्चा छोटा था. जैसा आया वैसा ही चला गया. अर्थात उनका जो गया है वह उन लोगों की तुलना में बहुत कम गया है. आगे कवि पत्नी को कहता है कि वह अतिथि था. जो अतिथि आता है वह एक दिन चला ही जाता है. अब जो हैं वेह घर के हैं. जो सुख दुःख के जीवनभर के साथी है. आगे कवि कहता है कि वह गया वही अच्छा हुआ. जिससे वह जन्म भर के भोगों एवं रोगों से छूट गया. हम जो सहते हैं वह उसे नहीं सहना पड़ा. वह उड़ता पंछी था जो विश्राम के लिए यहाँ ठहरा था. उसने माता-पिता को और माता-पिता ने उसको देखा, इतना ही बहुत है. इतने समय में वह आनंद दे गया. अब जिसने उसका भार लिया है. वह उस दम्पत्ति से भी अधिक समर्थ है. जबतक मनुष्य अभिमान रखता है तबतक उसे उसके परिणाम भोगने पड़ते हैं. सारा भार हम उस पर छोड़ दें तो कोई ताप

तपायेगा नहीं. इसका अर्थ यह नहीं है कि हम निश्चिन्त होकर बैठे रहे और कुछ कार्य न करे. उसने ज्ञान-कर्म की शक्तियाँ भी दी है. इस शक्ति से वे स्वधर्म की साधना करना चाहते हैं. देह उसका है स्वरूप हमारा है. घर उसका है लेकिन कर्म हमारे है. जब सर्वस्व उनका है तब सुख दुःख हमारे कैसे होगे.' आगे कवि कहता है कि यहाँ हम अकेले नहीं है. हमारा साथी भी यहाँ है. जो हमारा था उसको जगत में भोग लिया है. अब जो प्रभु देंगे उसे ही लेने आये हैं. जो अपने प्रभु को दिया जाता है उसे देने आये हैं. देव ने कवि को दयनीय समझकर दंड नहीं दिया है. उसको नियति से दान और ऋण लेना न पड़ा. हमारे दिन उलटे हो फिरभी हमें सीधी गति से चलना है. आगे कवि कहता है कि माँ को प्रसव-वेदना ईष्ट होने से उसने पाई थी. लेकिन यह व्यथा प्रभु की दी हुई है. उस व्यथा को ईश्वर के चरणों में अर्पण कर देना चाहिए. माता-पिता बच्चे को चाहते हैं क्योंकि उनके लिए उसके सिवा ओर कोई सहारा ही नहीं रहता है. दाता ने बार-बार फूल चुन लिये. ईश्वर ने पुत्र दिये और ले लिये. फिरभी वे ईश्वर की ओर देखते हैं. दीवारों में दरारें पड़ी है. वहाँ दो दुःखियों की खाटें पड़ी है. वहाँ आज तीसरी खाट नहीं है. दम्पत्ति पुत्र के बारे में सोचकर साँस लेते है. जो चले गये हैं उनकी उन्हें गंध आती है. काली घटा छाई हुई थी. खिड़कियाँ खुली थी. बाहर भीतर सर्वत्र अंधकार फैल गया है. पुत्र के बिना घर में अंधकार छा गया है. उसका दीपक बुझ गया है. इस रचना के आरंभ में तीन खाटें थीं. इसके अंतमें दो खाटें हैं. इतना कहकर कवि ने पुत्र मृत्यु का संकेत किया है. इसके साथ उसके हृदय की व्यथा प्रकट हुई है. कवि कहता है कि तेरी मैया यहाँ है. इतना कहकर रोने लगता है. तब नारी नर के नेत्र पोंछती हुई कहती है कि तुम मत रोओ. प्रारंभ में पतिने पत्नी को सांत्वना दी और अंतमें पत्नी ने पति के आँसू पोंछें.

इस काव्य में सुमन्त्र और सुदर्शन की मृत्यु का उल्लेख किया गया है. दोनों पुत्रों की मृत्यु से दंपति के शोक की कोई सीमा ही नहीं रही. पिता

बालक की बाल चेष्टाओं का वर्णन करते हुए उसके वियोग में अश्रु बहाते रहे. इतना होते हुए भी कवि की जीवन निष्ठा अडिग रही है. और उन्होंने माता के क्षोभ को निवारित किया है. इस प्रकार " सान्त्वना " में कवि ने अपूर्व धैर्य का परिचय दिया है. कवि पुत्र शोक से दुःखी है फिरभी उन्होंने पत्नी को सान्त्वना दी है. इसमें शोक का उदय, विकास और उसका उदात्तीकरण अभिव्यक्त हुआ है. इसप्रकार यहाँ कवि ने पारिवारिक वातावरण की सृष्टि की है.

" छिन्न-दल " की रचनाएँ शोकात्मक एवं आध्यात्मिक है. कवि संतति-वियोग से दुःखी हुए. इन रचनाओं में कवि के हृदय की व्यथा प्रकट हुई है. कवि दुःखी हैं फिरभी वह शोक का त्याग करना नहीं चाहता है. वह शोक को प्यार करता है और उसको अपने हृदय में आश्रय देता है.

> कैसे तजूँ तुझे मैं शोक ।
> आ, जा, आसन मार बैठ जा, मेरा उर है तेरा ओक । "[1]

शोक एवं दुःख में ही मनुष्य ईश्वर के सान्निध्य की इच्छा करता है. हर्ष एवं आनंद के अवसर पर उसे भूल जाता है. पर दुःख के आगमन से कवि को ईश्वर की सूचना मिलती है. पुत्र वियोग होने से कवि ईश्वर का स्मरण करने लगे. जिस शोक से ईश्वर को प्राप्त करने का अवकाश मिला, उस शोक को कवि कैसे भूल सकता है ? उस शोक को कवि प्यार करता है. उसे गले लगाता है. ब्रह्मा को प्रसन्न रहने के लिए कहता है. " मेरे करुणा-कंज खिलो "[2] कवि ईश्वर के पास जायगा. उसकी सौरभ की इच्छा से वह जी रहा है. तब वह मादक मधु पीने के लिए और रोम हर्ष से कण्टक सहने के लिए भी तैयार है.

> " सौरभ-लाभ हेतु ही जी लूँ,
> दो तो मादक मधु भी पी लूँ ।

---

1. उच्छ्वास, पृ. 125
2. वही, पृ. 126

रोम-हर्ष-से कण्टक भी हूँ " [1]

वह दुःख भी सहेगा, लेकिन ईश्वर प्रसन्न रहना चाहिए. अब कवि को ईश्वर के सिवा और किसी की इच्छा नहीं है. कवि अपवित्र है, वह ईश्वर को कहता है कि मुझे स्पर्श मत कर.

" न छू, अशुचि हूँ मैं, शुचि होऊँ,
काटू क्यों न आप जो बोऊँ ?
खोजूँ स्वयं उसे जो खोऊँ,
सँभलूँ, ठोकर खाऊँ ।
न आ, न आ तू, मैं ही आऊँ । " [2]

कवि ने ईश्वर का महत्व भी समझाया है. प्रभु जिसका निर्माण करता है उसका नाश भी करता है. जिस चीज को उसने खोई है, उसको ही वह खोजता है. मनुष्य ठोकर खाने के बाद जाग्रत होता है. गिरने के बाद वह ऊपर उठता है. वह ईश्वर के नियम को जानता है. वे अनुभव से ईश्वर को पहचानते है. कवि उससे दया की भिक्षा माँगना नहीं चाहता है. उसे न्याय के उपदेश का त्याग करना पसंद नहीं है.

" क्या मैं माँग दया की भिक्षा,
तजूँ न्याय की तेरी शिक्षा ? " [3]

वह ईश्वर के गुण गाता है और कहता है कि तू न आ. कवि ने स्वयं बंधन स्वीकार कर लिया है तब वह अपने आप छूटना नहीं चाहता है. कवि स्वयं ईश्वर के पास जाना चाहता है.

कवि संसार के विषयों में फँस गया है. तब इसका और कोई उपाय नहीं है.

" तू वा और कोई क्या कहेगा वह बात हरे,

---

1. उच्छ्वास, पृ. 126
2. वही, पृ. 127
3. वही, पृ. 128

आप मैं पुकार उठता हूँ अरे, क्या किया ' " [1]

कवि को मृत्यु का भी भय नहीं है, क्योंकि यहाँ जीना और मरना दोनों एक सा है. उसका संसार से जो संबंध रहा है वह शरीर और मन से रहा है. जीव ने यहाँ से न तो कुछ लिया है और न तो कुछ दिया है. शरीर और मन दोनों इस संसार के विषयों में फँस गये है. वह रोने लगता है. उसने यहाँ जीने के बाद भी कुछ प्राप्त नहीं किया है उसका स्वीकार किया है. उसकी समझ में यह नहीं आता है कि उसने दुःख क्यों पसंद किया है ' वह दुःख झेलते हुए रोने लगता है.

ईश्वर ने जिस माया को उत्पन्न की है उसका कवि ने स्वीकार किया है-

" व्यापी हरे, तुझे ही तेरी
वह दुरत्यया माया,
मुझको मार मार अपने को
तू मनवाने आया ' " [2]

पुत्र की मृत्यु के पश्चात् कवि ने उस माया का अस्वीकार किया है. अब वह उसमें फँसना नहीं चाहता है. वह माया को त्यागकर ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है. कवि कहता है कि उसके लिए प्रेम की जरूरत थी द्वेष की नहीं. जहाँ ईश्वर को अमृत से काम लेना चाहिए वहाँ विष से लिया है.

" मरता क्या न प्रेम से ही मैं,
तू ने द्वेष दिखाया,
जहाँ काम होता मधु लेकर
यह मादुर क्यों लाया ' " [3]

कवि जब भयभीत हो गया है तब वह मार्ग कैसे तर सकता है ' उनका मन विद्रोही है. ईश्वर के विरुद्ध कुछ भी नहीं करता है. " हैं " के साथ " नहीं " भी रहता है. उसको हमने प्राप्त किया हो या न किया हो. कवि ने दोनों

1. उच्छ्वास, पृ. 129
2. वही, पृ. 131
3. वही, पृ. 131

से अलग रहने के लिए और ईश्वर का प्यारा बनने के लिए कहा है.

" हँ के साथ नहीं भी तो है,
पाया और न पाया,
अरे, परे रह तू दोनों से,
बन मेरा मन भाया । " [1]

कवि अपनी हार स्वीकार करता है. इस संसार में कवि की हार होती है और ईश्वर की जीत. ईश्वर ने कवि पर अनेक प्रहार किये जिसमें कवि हार गया. लेकिन उन प्रहारों को सहने से ही कवि को नया जीवन मिला. ईश्वर ने गुप्तजी के परिवार में अनेक पुत्रों का जन्म दिया. लेकिन उनकी मृत्यु हुई. कवि ने उनको बचाने के लिए अनेक प्रयत्न किये, परन्तु इसमें वे निष्फल गये. परिणामस्वरूप ईश्वर की विजय हुई. आगे कवि कहता है कि मैं बहुत रोया हूँ. मैंने अनेक कष्ट सहन किये हैं तब तो तू हँस. कवि ने प्रभु के लिए आँसू बहाये हैं. वह ईश्वर को हँसकर अपने अश्रु को सफल करना चाहता है. वह सिर्फ रोया ही नहीं है उसने अपने रत्नों को भी खोया है. उसने अपने जीवन की अमूल्य चीज खोई है. तब कवि रोता है. जब वह बहुत रो चुका तब ईश्वर को हँसने के लिए कहता है.

" अब तो हँस दे, ले, मैं रोया ' " [2]

कवि ने अपने घर को स्वच्छ किया है. खेत में यथेच्छ मोतियों का बीज बोया है. उसका पाथ कवि के लिए पानी है.

" तेरा पाथ इन्हीं का पानी,
बात आज यह मैंने जानी,
आ तो फिर हे मेरे मानी । " [3]

---

1. उच्छ्वास, पृ. 131
2. वही, पृ. 133
3. वही, पृ. 134

उसका जीवन सुखी है. उसको देखने के लिए कवि उसे बुला रहा है. कवि चाहता है सुकाल या दुष्काल हो लेकिन अकाल नहीं होना चाहिए.

" हो सुकाल-दुष्काल भले ही,
काल परन्तु अकाल न हो,
हरे ! मरण है ही जीवन में,
पर जीवन जंजाल न हो । " [1]

जब जीवन है तब मृत्यु भी निश्चित है. जीवन जंजाल न होना चाहिए. जीवन भार नहीं बनना चाहिए. भाल को ऊँचा रहना चाहिए. डाल, फूल युक्त होनी चाहिए. बड़े घर में छोटा बाल भी होना चाहिए. इसके बिना रत्नों का भाण्डार भी व्यर्थ है. कवि ने यहाँ अच्छी चीजों की इच्छा प्रकट की है. कवि को ईश्वर ने भिक्षा दी है. लेकिन अब कवि डर गया है. लय में ताल होना चाहिए.

" लय को बाँधे रहे कौन, यदि
उसके सम में ताल न हो,
पके ज्ञान का सुफल कहाँ, यदि
यहाँ मोह का पाल न हो । " [2]

ईश्वर ने कवि को पुत्र दिये हैं लेकिन उसकी मृत्यु होने से कवि दुःखी हो गये. अब वह और किसी चीज की इच्छा नहीं करता है. अब कवि कहता है -

" हाथ नहीं वे अब पैर बढ़ाकर पूरो मेरी चाह,
मिटे उन्हीं पहनों के मधु से इन अधरों का दाह । " [3]

---

1. उच्छ्वास, पृ. 135
2. वही, पृ. 136
3. वही, पृ. 137

कवि पहले से दुःखी होने के कारण अब वह किसी और चीज या पुत्र की इच्छा नहीं करता है. इस भवसागर को मथा जाय, इस संसार की अच्छी चीजें ईश्वर के लिए रखी हैं, मनुष्य के लिए इस संसार की बुरी चीजें रही है.

" मथा जाय मेरा भव सागर,
तेरे लिए रहा मेरे प्रभु, इसका अमृत उजागर । "[1]

इसका अमृत प्रभु के लिए रखा है तब यह प्रश्न उठता है कि इसका विष कौन ग्रहण करेगा ?

" पर विष निकल रहा जो इससे,
जला जा रहा जीवन जिससे,
ले लो इसे कहूँ मैं किससे ? "[2]

ईश्वर निर्मम है तब उसे न्यायी कैसे कहा जाय ? वह ईश्वर से माँगना चाहे तो भी क्या माँगे ?

" क्या माँगूँ मैं तुझसे ?
हरे ! इन्द्रियाँ के दीपक ही रहे अरे, ये बुझ से "[3]

जब उन्होंने पुत्र को छीन लिया है तब सर्वत्र अँधेरा छा गया है. कवि यह भी नहीं चाहता है कि ईश्वर उसके पाप को क्षमा करे. वह पाप काटने की शक्ति चाहता है.

" क्षमा न कर तू मेरे पाप,
इतना ही कर, काट सकूँ मैं उनको अपने आप । "[4]

---

1. उच्छ्वास, पृ. 138
2. वही, पृ. 138
3. वही, पृ. 140
4. वही, पृ. 141

प्रभु के कानों तक अपना विलाप न पहुँचे इसीलिए आँखों की मलिनता धोना चाहता है. अब वह श्रेष्ठ चीज को नहीं बल्कि शाप को पूरा करना चाहता है.

" वर रहने दे, पूरे हो लें अनजाने अभिशाप,
शुद्ध-स्वर्ण- सा पड़ूँ पदों में तरकर तीनों ताप । " [1]

बादमें, तीनों ताप को तरकर शुद्ध होकर कवि उसके पैरों में पड़ता है. कवि ईश्वर से प्रेम और दया चाहता है. उसकी इच्छा के सिवा कुछ भी नहीं होता है. वह सबल एवं सर्वशक्तिमान है. तब और कोई उपाय ही नहीं रहता है.

कवि पुत्र की मृत्यु के पश्चात् सर्वशक्तिमान ईश्वर का सान्निध्य ग्रहण करता है. अब उसको इस बात की प्रतीति हो गई है कि संसार में ईश्वर के सिवा और कोई नहीं है. वह महान है. वह सुख- समृद्धि को देता भी है और छीन भी लेता है. वह अपने पुत्र की रक्षा कर नहीं पाया , तब ईश्वर के प्रति उसकी आस्था प्रबल हुई. उसको इस बात की प्रतीति होती है कि प्रभु ही एक मात्र सर्वशक्तिमान है.

अभिव्यक्ति पक्ष

भाषा

" झंकार " की खड़ीबोली में पर्याप्त ओज एवं प्रवाह विद्यमान है. भाषा भावानुकूल है. अर्थात्, सरल, चपल, मंथर या तो गीतिमयी है. इसके गीत समय-समय पर लिखे गये हैं जिससे इसमें कहीं सरसता है तो कहीं नीरसता भी है. इसकी भाषा संस्कृत बहुला नहीं है. फिरभी संस्कृत मिश्रित भाषा का अवश्य प्रयोग हुआ है. इसके अतिरिक्त कवि ने ग्राम्य शब्दों को भी प्रयुक्त किया है. " अंजलि और अर्घ्य " की भाषा प्रसंग गर्भित

---

1. उच्छ्वास ,पृ. 14।

एवं परिमार्जित है. इस रचना में सर्वत्र गति प्रवाह और दीप्ति के दर्शन होते हैं. इसके अतिरिक्त कला की दृष्टि से भी यह रचना काफी सरस, रोचक एवं प्रभावशाली बन पड़ी है. काव्य-तत्वों की दृष्टि से काफी अच्छी रचना है. भाव की अभिव्यक्ति सीधी एवं सरल है. " उच्छ्वास " की भाषा प्रसादपूर्ण सरल उद्गारात्मक भाषा है.

मुहावरें
=====

जब ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है तब मनुष्य को इस संसार के बंधन से मुक्ति मिल जाती है. " नर-भव-सागर भी तरता है. " [1] इसके अतिरिक्त " झंकार " में " काँटों में ये फूल खिले थे " [2] " अँक लगूँगी " [3] आदि मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है. " अंजलि और अर्घ्य " में कवि कहते हैं कि हत्यारे ने गांधीजी की हत्या कर एक बहुत बुरा कार्य किया. इसके बाद भी उसे क्या मिला ? " हाथ न मिट्टी भी आई " [4] अब भारतवासियों को सतेज रहना चाहिए कि कहीं वे फँस न जाय - " हम काँटों में अटक न जाय " [5] चारुशीलाशरण जी के पुत्र की मृत्यु से सर्वत्र अंधकार छा गया. मानो उनके घर का दीपक ही बुझ गया. " अन्धकार छा गया सामने उपजा विषम विकार " [6] इसके अलावा " और सदा सिर पटक पटक कर तुम मरो " [7] आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है.

---

1. झंकार, पृ. 56
2. वही, पृ. 130
3. वही, पृ. 156
4. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 11
5. वही, पृ. 13
6. उच्छ्वास, पृ. 23
7. वही, पृ. 65

लोकोक्तियाँ

कवि कहते हैं कि जैसी चीज होती है उसके साथ वैसी ही चीज का प्रयोग करना चाहिए. " कण्टक निकालने को कण्टक ही चाहिए ".[1] इसके अतिरिक्त " सुनों, गाँठ के पूरे हैं हम , किन्तु आँख के अन्धे " [2] आदि लोकोक्तियाँ भी " झंकार " में प्रयुक्त हुई है. " अंजलि और अर्घ्य " में गांधीजी के गुणों का स्मरण करते हुए कवि कहते हैं कि " शठ के प्रति भी साधु रहा तू, जूझा उसके शाठ्य विरुद्ध " [3] " उच्छ्वास " में पुत्र की मृत्यु के बाद कवि कहते हैं कि सब लोग कर्म के आधीन रहते हैं-

" सब निज कर्माधीन भला या अनभला " [4]

सूक्तियाँ

" झंकार " में कवि कहते हैं कि ईश्वर को प्रत्येक युग में प्रत्यक्ष आने की प्रतिज्ञा का पालन करना चाहिए. " युग-युग में आने की अपनी अटल प्रतिज्ञा पाल हरे " [5] इसके अलावा " इसको सपने का ही सुख है " [6] आदि सूक्तियाँ का प्रयोग भी हुआ है. गांधीजी अहिंसक थे और शांति-प्रिय थे. उनका सिद्धान्त था कि " जियो और जीने दो तुम " [7] " सत्य - अहिंसा को अपनाओ, निर्भय हो जाओ सब देश " [8]

---

1. झंकार, पृ. 34
2. वही, पृ. 65
3. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 29
4. उच्छ्वास, पृ. 66
5. झंकार, पृ. 53
6. वही, पृ. 150
7. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 36
8. वही, पृ. 42

आदि सूक्तियाँ " अंजलि और अर्घ्य " में प्रयुक्त हुई है. सियारामशरण जी के पुत्र की मृत्यु पर कवि ने कहा कि-

" सचमुच निष्ठुर काल महा विकराल है " [1] " जैसे रक्खे राम, हमें वैसे ही रहना " [2] आदि सूक्तियाँ प्रयुक्त हुई है.

रस योजना

" झंकार " के गीत भक्ति परक हैं. अतएव भक्ति रस के छींटें इन गीतों में दिखाई पड़ते हैं. निम्न छन्द में माधुर्य भाव की भक्ति भावना व्यक्त हुई है.

" आँख मिचौनी में तुम प्यारे,
पलक मारते छिपे कहाँ,
थक कर हार गई हूँ यह मैं
तुम्हें खोजकर जहाँ तहाँ ।
फिर भी हार मानने में क्यों
होता है संकोच । " [3]

" अंजलि और अर्घ्य " करुण रस से आप्लावित शोक-गीति है.

" अरे राम ! कैसे हम झेले
अपनी लज्जा उसका शोक ?
गया हमारे ही पापों से
अपना राष्ट्रपिता परलोक । " [4]

" उच्छ्वास " की अधिकतर गीतियों में करुण रस का परिपाक हुआ है.

---

1. उच्छ्वास, पृ. 18
2. वही, पृ. 89
3. झंकार, पृ. 132
4. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 7

" आये वैद-हकीम, दवाएँ दी गईं,
जितनी जो हो सकी क्रियाएँ की गईं ।
किन्तु विफल ! वर, मरा हाय ! अब मैं मरा "
कह चिर नीरव हुआ कि सूखा तरु हरा ।
आता था यह एक अचीती धार का,
पार रहा कुछ यहाँ न हाहाकार का ।
माँ ने रक्तस्नान किया सिर-फोड़कर,
वह मूर्च्छित हो गिरी पुत्र के क्रोड़ पर । " [1]

बिम्ब विधान

" झंकार " में कालिन्दी एवं जीवन का प्रभावशाली बिम्ब इसप्रकार प्रस्तुत किया गया है -

" सूख रही है कल-कालिन्दी,
फैल रहे शैवाल हरे !
जीवन में जड़ता आई है,
विगत कमल, हत नाल हरे ! " [2]

विदेशी सत्ता के अत्याचारों के कारण देश में चारों ओर अंधकार छा गया था. किन्तु गांधीजी के राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने से " अत्याचारों का अन्धकार " हट गया. जैसे प्रकाश के आगमन से अँधेरा नष्ट हो जाता है वैसे ही गांधीजी के आने से अत्याचार भी मिट गये.

" कुछ न सूझते अँधियारे में
उजियाला-सा आया तू " [3]

1. उच्छ्वास , पृ. 62-63

2. झंकार, पृ. 52

3. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 38

अँधियारे एवं उजियाला शब्दों के द्वारा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति एवं गांधी के भास्वर व्यक्तित्व का बिम्ब अंकित हुआ है. निम्न पद्य में शोक की व्यंजना हुई है -

" निशि का सारा शान्त भाव हत हो गया,
नभ के उर का एक रत्न- सा खो गया ।
आभा उसके अमल अन्तिमालोक की
रेखा- सी कर गई हृदय पर शोक की ।
सारे तारे उसे देखते ही रहे,
ठंडी आहें खिंची और आँसू बहे । " [1]

अलंकार विधान

विरोधाभास

" दीप्ति मुझे देगा अभिराम कृष्ण पक्ष ही " [2]

यमक " घर घर को, बाहर बाहर को,
आज आज को, कल कल को,
जल-थल जल-थल को, नभ-नभ को,
अनिलानल अनिलानल को,
और तुम्हें क्या ढूँगा प्यारे ? " [3]

" आत्मा ही आत्मा था तू तो,
कहने को तेरे तनु था " [4]

अन्त्यानुप्रास

" अपने कर्मों का फल हमको-
सबको ही- पाना होगा,

----

1. उच्छवास, पृ. 18
2. झंकार, पृ. 34
3. वही, पृ. 68
4. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 40

बापू, किन्तु यहाँ फिर तुझको,
एक बार आना होगा । "[1]

उत्प्रेक्षा

" दब- मुँदकर सब लोग पड़े हैं हिम के भय से,
दो जन अब भी जाग रहे हैं स्फुरित हृदय से ।
मानो कोई चोर घुसा आता है भीतर,
दम्पति का सर्वस्व लिये जाता है हरकर । "[2]

उपमा

" हाय ! फूल-सा हास और मोती-सा क्रन्दन,
जलद-गर्भगत चलित चन्द्र-सा हृदय-स्पन्दन । "[3]

छन्द विधान

" झंकार " में मालिका, अहीर, विषम विकर्णाधार आदि छंद प्रयुक्त हुए हैं. यह विकर्ण छन्द सरसी और चौपाई के तीन चरणों से मिलकर बना है. सरसी और चौपाई का लय-निपात सम है. इसका नाम सरसी दल छन्द है. "[4]

" तेरी पृथ्वी की प्रदक्षिणा
देख रहे रवि सोम,
वह अचला है करे भले ही
गर्जन तर्जन व्योम ।
न भय से, लीला से हूँ लोल,
सखे, मेरे बन्धन मत खोल । "[5]

1. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 42
2. उच्छ्वास, पृ. 85
3. वही, पृ. 92
4. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना-डा० पुत्तूलाल शुक्ल, पृ. 320
5. झंकार, पृ. 23

विषम विकर्षाधार

" हे भगवान !
तेरा ध्यान -
जो करता है क्यों करता है ?
सुख के अर्थ ?
तो है व्यर्थ ।
सुख से तो पशु भी चरता है । " [1]

" अंजलि और अर्घ्य " में वीर छन्द का प्रयोग हुआ है. इसमें 16, 15 की यति से 31 मात्राएँ रहती हैं और अन्त में गुरु- लघु.

" हुआ देवकी का मोहन-सा
तू भारत जननी का जात,
उसके बन्धन कटे और हा !
व्याध- बधिक ने किया कुघात ! " [2]

" उच्छ्वास " में ककुभ, सरसी आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है. यह छन्द 30 मात्रा का है. इसमें 16, 14 मात्रा पर यति पड़ती है.

" झूम झूमकर आता था तू,
घूम घूमकर जाता था,
चूमा जाकर मुझसे बहुधा
मुझे चूमकर जाता था. " [3]

निजी एवं पारिवारिक प्रसंगों को आधार मानकर लिखी गई ये रचनाएँ मूलत: उद्‌गारात्मक हैं. इनमें हमें कलापक्ष की वह कलाकारिता नहीं प्राप्त होती जो गुप्तजी की अन्य रचनाओं में उपलब्ध होती है. सरलता एवं मार्मि--कता इन कृतियों की अपनी विशिष्टता है. अनुभूति की गहराई और अभिव्यक्ति की ईमानदारी इन रचनाओं में विशेषरूप से उल्लेखनीय है.

1. झंकार, पृ. 56
2. अंजलि और अर्घ्य, पृ. 30
3. उच्छ्वास, पृ. 30